निर्मल झंकार

(तृतीय संस्करण)



काव्य और संगीत कला का संगम नव निर्मल झंकार।
सादर करूं समर्पित मैय्या, दिव्य सरस निर्मल उपहार।।

श्रीशः

लेखक की ओर से

ईश्वर, देश, समाज व माता-पिता के समक्ष, अपने ज्ञात-अज्ञात अपराधों के लिए क्षमा याचना, उनके अपार अनुग्रह के लिए कृतज्ञता, अतिरिक्त कृपा के लिए आग्रह-विनय, उनकी विवशताओं और व्यवस्थागत विसंगतियों के लिए मधुर उपालंभ प्रस्तुत करना ही सापेक्ष भक्ति कहलाती है। मनीषियों, संतों और प्रकृति के, मनुष्य मात्र पर, अनंत उपकार हैं। भक्ति में निष्कपट वैचारिक व भावगत आदान-प्रदान होता है। सत्संग, चाहे खुले मंच पर हो या मंदिर में, सुमार्ग प्रदर्शित करके भटकते-बहकते मानव को मानवीय गुणों व अपेक्षाओं की ओर सहज ही मोड़ सकता है।

जो काम, वर्षों के प्रयास, दबाव और अत्याचार भी न कर पाए थे, वह आज, फिल्मों व दूरदर्शन के माध्यम से, आज के लोकरंजक साहित्य ने कुछ ही वर्षों में कर दिखाया। आज भारतीय समाज की ईमानदारी, विनम्रता, सच्चरित्रता, राष्ट्रभक्ति, धार्मिकता, अहिंसा, करूणा, संवेदनशीलता और त्याग भावना पर शत-प्रतिशत विश्वास नहीं किया जा सकता। धन व सुविधा साधनों और लोकरंजन की ललक ने मानवमात्र को केवल खाओ पीओ मौज उड़ाओ तक ही सीमित कर दिया है।

''जितने बढ़े सुखों के साधन, हुए संकुचित उतने तन, मन।''

इसीलिए, सद्भावों पर आधारित भजनों का प्रसारण व प्रचार आवश्यक लगता है।

प्रस्तुत निर्मल झंकार इसी प्रयास का प्रकाशन है।

लोकरंजन का लक्ष्य लेकर आजकल बड़ी संख्या में भजन लिखे व गाए जा रहे हैं। श्रोता लोग मनोरंजन, कलाकार अपने धनोपार्जन तथा 'साज-आवाज' की स्पर्धा में लीन है। भजन विशुद्ध भावाभिव्यक्ति नहीं है। संयोजक भी प्रायः इस व्यावसायिक-विज्ञापन शैली को ही पसंद करते हैं।

निर्मल झंकार के भजनों का आलेखन व प्रस्तुतीकरण 1952 से लगातार प्रगतिरत रहा है। इसमें छिछली तर्जे और विलासी भाव नहीं है। यह मानवीय गुणों की ओर अग्रेषित करने वाले भजन हैं।

इस संशोधित संग्रह में कुल, 181 चुने हुए भजन हैं। इस संग्रह को 'निर्मल झंकार कीर्तन मंडल', होडल ने पूरे दायित्व व उत्साह से प्रकाशित करवाया है। इस सौजन्य के लिए मैं उन सभी सदस्यों का आभार व्यक्त करता हूँ। आयु0 हेमन्त निर्मल, प्राचार्य (सुपुत्र) ने इसके संपादन व मुद्रण में सक्रिय योगदान दिया। घर के सभी सदस्यों ने परिवेश को अनुकूलता प्रदान की। डॉ. श्री आर.सी. शर्मा ने इस संग्रह की समीक्षा प्रस्तुत की। उन सभी महानुभावों को धन्यवाद जिन्होंने इसके प्रकाशन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में योगदान किया।

इस पुस्तक के प्रकाशन के साथ मेरे अन्तर्मन में विराजमान भगवान भी संतुष्ट होंगे और भक्ति संगीत क्षेत्र के प्रतीक्षारत गायक भक्तों को भी प्रसन्नता प्राप्त होगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

शुभम्।

दिनांक :
24 मार्च, 2010
राम नवमी

पुरुषोत्तम दास निर्मल

श्रीशः

प्रकाशक की ओर से

श्री पुरुषोत्तम दास निर्मल, सन् 1970 से 1972 तक हम सभी के साथ होडल में रहे। हममें से अधिकतर सदस्य उन दिनों, बाल और किशोरावस्था में थे। यहाँ उन दिनों भजन-कीर्तन का वातावरण नहीं था। श्री निर्मल जी के साथ रहकर ''निर्मल झंकार कीर्तन मण्डली'' के माध्यम से सत्संग की महक इस क्षेत्र में फैली। निर्मल झंकार मंडली की 35वीं वर्षगांठ तथा श्री निर्मल जी की 'हीरक जन्म तिथि' (75वीं वर्षगांठ) के सुअवसर पर निर्मल झंकार (तृतीय संस्करण) का उपहार भक्त गायकों के कर कमलों में समर्पित करने का प्रयास था। प्रेस कार्य में विलंब हो गया। समर्पण कार्य 2010 में ही संभव हो पाया।

प्रस्तुत झंकार के भजन सरस, गंभीर, नैतिक मूल्यों के अनुरूप, मर्यादित, लयबद्ध एवम् भाव-प्रधान हैं। आज के छिछले भावों से युक्त साहित्य का स्पर्श भी इन भजनों में नहीं है। इस संस्करण के भजनों के विषय में, संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि ये शब्दों और भावों तथा संगीत व साहित्य का अद्‌भुत संगम है।

आशा है, यह दुर्लभ भजन, संग्रह, आप सभी को पसंद आएगा। इसके भजन, देश में प्रवाहमान वासना व लोक-रंजन प्रधान युग धारा को स्वस्थ, मर्यादित एवम् नैतिक मूल्यों की ओर अग्रसित करने में सक्षम हो सकेंगे।

आप सभी को सादर प्रणाम करते हुए,

दिनांक :
24 मार्च, 2010
राम नवमी

प्रकाशक
निर्मल झंकार कीर्तन मंडल,
होडल के समस्त सदस्य गण।

भारतीय मन, संस्कार और भक्ति का त्रिवेणी संगम (निर्मल झंकार-3)

महाकवि पुरुषोत्तम दास निर्मल किसी परिचय के मोहताज नहीं है। वे धुर दक्षिण हरियाणा के एक एकान्त कोने में तन से भले सिमटे हों किंतु उनका रचना-संसार बहुत बड़ा है। यूं तो उन्होंने साहित्य की अनेक विधाओं में विपुल साहित्य की रचना की है किंतु वे मूलतः कवि हैं। उन्होंने हिन्दी संसार को छः (6) महाकाव्य दिये हैं। ये महाकाव्य हैं - विधुरा, महाभारत रत्न, वेणुगोपाल, पद्मेश तथा मानस परिक्रमा। 'अरूण पताका' (एक अनूदित प्रबंध-काव्य है)। इन महाकाव्यों द्वारा उन्होंने देश और साहित्य-इतिहास क्षेत्र की गणेश-परिक्रमा की है। उनकी 'निर्मल सतसई' रीतिकालीन परम्परा में रचित एक अन्य उत्तम कृति है। सुप्रसिद्ध संस्कृत ग्रंथ 'दुर्गा सप्तशती' का हिन्दी में काव्य रूपांतरण उनकी एक अन्य प्रभावी रचना है। इसके अतिरिक्त उनकी दोहा, गीत, ग़ज़ल, मुक्तक रुपों में डेढ़-दो हजार फुटकर रचनाएं हैं जिनका विधिवत् प्रकाशन होना अभी शेष है। उनकी एक अन्य प्रशंसित रचना-'मानसपरिक्रमा' है - जो कि विश्व का संभवतः लघुत्तम महाकाव्य है। इसका भव्य लोकार्पण विगत वर्ष दिल्ली स्थित इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर में हुआ। उन्होंने ठेठ हरियाणवीं भाषा में भी अनेक लोकगीतों की रचना की है। महाकवि निर्मल सूक्ष्म भावों को बहुत सहज रूप में कहने की सामर्थ्य रखते हैं। वे बोलते कम हैं, देखते-कहते अधिक हैं। उनका यात्री-मन सूक्ष्म से विराट् तक का सहज द्रष्टा है। इसलिए जो कहा वह कागद का लेखा नहीं वरन् अपनी आंखिन देखा है। इस कारण उन्हें राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक प्रतिष्ठा मिली है।

भारतीय मन स्वभाव से आस्थालु है। श्रद्धा-विश्वास रूपी भवानी-शंकर उसके मन में विराजमान हैं। मन के इसी भाव में उसे स्वान्तः-स्थित ईश्वर के दर्शन होते हैं। भगवान् और भक्त के बीच का नाता ही भक्ति है। भक्त का मन भजन के माध्यम से ईश्वर से वार्त्तालाप करता है। तत्त्व की बात तो यह है कि भक्त और भजन दोनों सहजन्मा है। फिर भारत में तो भजनों के लेखक-गायन की एक सुदीर्घ परम्परा है। महाकवि निर्मल का मन भारतीय भाव का प्रतिनिधि है। उनका भावपूर्ण मन जब स्वयं की अभिव्यक्ति करना चाहता है तो इन शब्दों का रूप लेकर भजन में ढल जाता है- 'राम से लौ लगा आसरा है वही, गर सहारा मिला पार तर जायेंगे / एक पतवार है राम के नाम की, वो ना खोली तो बोलो किधर जायेंगे।'

निर्मल जी की बहुत-सी रचनाएं शास्त्रीय छन्दों में निबद्ध हैं और परम्परा के प्रभाव स्वरूप ये सभी रचनाएं पाठक के मन को छूती हैं। मल्हार-राग में निबद्ध ये पंक्तियां हृदय की गहराइयों में उतरती हैं - सखि! रिमझिम बदरा बरसे री/श्याम बसे जा मथुरा नगरी, नयन दरस को तरसे री!' शास्त्रीय छन्दों के साथ-साथ लोकगीतों की धुनें भी उतनी ही मनमोहक हैं। पर केवल इतना ही नहीं है। कवि ने आधुनिक गीत-संगीत की धुनों को भी रचना का आधार बनाया है। कला-क्षेत्र और विशेषकर सिने-क्षेत्र में गज़लों में ढला संगीत आज भी मन को तरंगित करने में समर्थ है। कुछ ऐसी ही धुन पर लिखा गया निर्मल जी का यह गीत हृदय को भक्ति-भाव में सराबोर करता है - 'छाए हो श्याम दिल पे, मेरे तुम खुमार बन के / आंखों में बसे रहना तुम इन्तजार बन के।' रसिया रूप में राम जन्म का वर्णन मन को मोहता है - 'अंगना में धूम मचाय गयो, वो दिन आय गयो /

अवधपुरी की शोभा लखकर, इन्द्रलोक शरमाय गयो।' विदाई गीत की ये पंक्तियां तो आंसुओं में कलम डुबोकर लिखी गई लगती हैं - 'रूणझुण रथवा, बहना मोरी चल दियो री / हे जी कोई सखियन भई हैं उदास, अब के बिछड़े जाने बहना कम मिलें री!'

भक्ति के आलम्बन के रूप में सगुण ईश्वर और निर्गुण ब्रह्म की आराधना की जाती है। किंतु यह कहने में कोई शंका नहीं है कि निर्गुण उपासना में भी कवि का मन उतनी ही भाव मग्नता में लीन है जैसे कि सगुण उपासना में। ये पंक्तियां द्रष्टव्य हैं - 'मन-मन्दिर में आन बसो निर्गुण अविनाशी रे / जगमग जीवन ज्योति जगा दो घट-घट वासी रे।'

निर्मल जी के ये भजन संगीत की लय में बंधे हैं। इन लयों में विविधता है, भारतीय मन का संस्कार है, मानवता का स्वर है, लीलाधर की लीला है, चरैवेति का संदेश है। उनके भजनों की भाव-धारा अपने आस-पास के परिवेश और स्थितियों को समेटती हुई आगे बढ़ती है। इनमें आध्यात्मिक अनुभूतियां हैं, मातृभूमि की वंदना हैं, भारत की गौरव गाथा है, माता-पिता के चरणों की पूजा है, मनुष्य लोक के साथ देव लोक है, विभिन्न देवी-देवता हैं, प्रकृति है, मनुष्यता के आचरण की प्रेरणा है, संतों की महिमा है, श्रद्धेय आलम्बन है तो प्रकृति के मनोहारी रूप भी नदियों, पर्वतों और तीर्थों के स्वरूप में इन भजनों में समाहित हैं। समष्टि से सारी भावधारा अंततोगत्वा, ईश्वर-सम्बंधों में परिणत हो जाती है। यूं तो उन्होंने अपनी रचनाओं में मनुष्य की स्वाभाविक दुर्बलताओं, दुर्वृत्त मनोभावों, व्यवहारों तथा पाखण्ड, छलछद्म, कुटिलता, कृतघ्नता, वंचना, ढोंग, लिप्सा, हिंसा, घृणा, ईर्ष्या-द्वेष तथा जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त प्रदूषण आदि

दोषों का भी उल्लेख किया है, लेकिन इनका फलितार्थ उसे इन विकारों से मुक्त होकर सीधा-सरल निर्मल जीवन जीते हुए प्रभु के चरणों की ओर उन्मुख होने की प्रेरणा देता है। भजनों की भाषा सर्वथा भावानुकूल है। जहां-तहां लोकोक्तियों अथवा मुहावरों का प्रयोग किया गया है, वहां भाषा की प्राजंलता देखते बनती है।

महाकवि निर्मल संगीत-साहित्य-कला में अभिरूचि सम्पन्न एक आदर्शनिष्ठ शिक्षक रहे हैं। अपने नाम के अनुरूप उनका चिंतन-दर्शन-लेखन-आचरण नितांत निर्मल रहा है, पवित्र गंगा के निर्मल जल की तरह। इसी सुन्दर निर्मल भावना के कारण वे पुरुषोत्तम भी हैं और अपने घट में रचे-बसे प्रभु के विनम्र-विनीत दास भी हैं। आत्मप्रकाशन से बहुत परे उनका अपना एक रचना संसार है जिसके वे स्वयं कविर्मनीषीपरिभूःस्वयंभूःब्रह्मा हैं, निरन्तर निर्विराम रचनारत। मेरी प्रभु से प्रार्थना है कि वे स्वस्थ एवं दीर्घजीवी हों और उन्हें ऐसी सामर्थ्य दें कि वे कभी रूकें नहीं, चुकें नहीं, झुकें नहीं। उन्हें मेरा विनत प्रणाम।



रमेशचन्द्र शर्मा

पौष पूर्णिमा, सम्वत् 2066
(31 दिसम्बर 2009)

पूर्व प्रांतीय महामंत्री,
अखिल भारतीय साहित्य परिषद् (पंजी.)
289, शिव कॉलोनी, रेवाड़ी-123401 (हरियाणा)

अनुक्रमणिका

1. जीवन ज्योति जगाओ गणपति (10.7.83)

2. गणपति वंदना (25.5.99)

3. शारदा स्तुति (3.2.83)

4. मैं दासी तेरे चरणन की (23.5.79)

5. सदा संकटों में प्रभु याद आए (18.9.84)

6. बहुत देर कर दी (10.12.85)

7. सच्चा गहना (16.4.67)

8. आज हुए भगवान कितने सस्ते! (4.6.67)

9. इस श्वास का क्या पता कब नहीं आए (20.6.67)

10. कहाँ जा रही है बता दो ये दुनियाँ (19.7.60)

11. हो गया इतना दीवाना (20.7.72)

12. कहीं अंधेरी रातें हैं कहीं सुहानी भोर (12.6.68)

13. राम से लौ लगा, आसरा है वही (8.2.62)

14. नाम जपन की गंगा (1.1.65)

15. वही वासनाओं का चक्कर पुराना (28.6.68)

16. बहुत पास से देख ली तेरी दुनियाँ (21.7.68)

17. भक्तों पै सितम दुष्टों पै करम (10.7.69)

18. कुछ न बिगड़ेगा तेरा (29.4.70)

19. आने को जग में आएँ हजार (30.6.70)

20. झूठा वंदन झूठा अर्चन (6.7.70)

21. मनुआ दीवाना हुआ रे (6.7.71)

22. बोल तेरे चाम का क्या दाम दिया जाए (11.12.71)

23. भोले प्राणी! (19.5.72)

24. सतसंगत से बुरे बुरे इंसान बदल जाते हैं (15.10.74)

25. आसमाँ की शान हो (20.7.60)

26. मन-मंदिर में आन बसो (20.1.60)

27. दुष्टों ने हमें घेरा (28.10.78)

28. वो जो दिल में समाए जाते हैं (25.5.79)

29. मिल के रहेंगे सदा (1.12.85)

30. जग जीवन की एक कहानी

31. पंकज जहाँ खिलेगा (8.5.87)

32. मानुष जनम अमोल है (20.5.99)

33. रचे मन पगला दीवाना (12.6.97)

34. पाप ही एक दिन राम हो जाएगा (1.5.07)

35. हर विरहन की एक कहानी (4.11.2000)

36. भर भर उदर जिया (19.7.60)

37. गज़ब हो गया (7.11.73)

38. कितना मजा आ रहा है (1.4.74)

39. मातृ भूमि वंदना (1973)

40. इन्हीं पाँचों ने हर लीना (1973)

41. झूला तुझे झुलाऊँ (1973)

42. मन मारो मन (1973)

43. मिलता है बड़े भाग्य से (1973)

44. पल पल प्रभु का नाम ले (1973)

45. हम तुम (1973)

46. निष्क्रिय बैठा रहे सदा जो (1973)

47. नाशवान तन में शोभित (1973)

48. उम्र छोटी है तृष्णा बड़ी (1973)

49. काम हर अनुपम तुम्हारा (14.6.76)

50. हर मुसीबत से बचाया (4.1.77)

51. सखि! कर सोलह सिंगार (निर्गुण भजन) (18.7.77)

52. धीरे-धीरे ले चल मांझी (18.7.77)

53. प्रेम नहीं कहलाता प्रियतम (18.7.77)

54. मन कितना पगला दीवाना (7.3.78)

55. गर सुख की चाहत है तुमको (5.11.78)

56. तू जहाँ जहाँ चलेगा (1999)

57. माँ बाप के चरण में (23.9.73)

58. रिमझिम बदरा बरसे री (मल्हार) (29.6.74)

59. पास रहे पास हैं, दूर रहे दूर (31.8.80)

60. जान माता-पिता पै निसार (20.9.61)

61. ये राम इतना गिरा नहीं है (2.1.61)

62. जाने इंसान को आज क्या हो गया (22.5.87)

63. चले-चलो (4.3.67)

64. नहीं भेद पाया (5.7.54)

65. ना इतना भुलाना (2.6.66)

66. एक मानव दो-दो जुल्म करे (18.7.60)

67. हाय! तूने ये क्या किया (19.7.60)

68. समझ ही न आए कि मंजिल कहाँ है (19.7.60)

69. निर्मल जीवन

70. आदमी बेवफ़ा बन गया है (4.10.71)

71. वीर हो हिन्दुस्तान के (4.4.85)

72. कितना प्यारा अपना हिन्दुस्तान है (3.9.85)

73. अपने वतन की जमीं महान है (24.4.85)

74. मरे जो देश के लिए (1985)

75. आज देश को नवीन प्राण चाहिए (1985)

76. ज़िन्दगी की हर खुशी (1983)

77. करते करते काम (1985)

78. तुम्हीं मेरा तन मन (15.9.84)

79. जग में आके (25.1.81)

80. कारे बादरवा आए (01.8.84)

81. पावन प्रेम-वाटिका में तुम! (28.11.83)

82. जब नाम लिया तो डरना क्या (3.12.67)

83. सब ने छेड़ा है (15.1.78)

84. भक्त मेरे हैं मैं भक्त का हूँ सदा (27.10.78)

85. हैं हम तुम से दूर कितने (25.3.83)

86. नमो चण्डिका (भुजंग प्रयात छंद) (2.4.61)

87. ये कैसी निठुराई (5.2.75)

88. तेरी अमर कहानियाँ (16.6.73)

89. जय अम्बे जय जय जगदंबे!

90. अम्बे मैया (4.7.82)

91. मैय्या तेरे भक्तों का (10.7.83)

92. जब जब सितम होंगे (21.2.80)

93. तेरी करुणा अगर मुझ पर ऐ मां एक बार हो जाए (27.6.79)

94. मुसीबत का मारा ... (19.2.80)

95. बीती आधी रात भजन में (7.6.81)

96. भवानी स्तुति (23.11.69)

97. तेरे द्वारे अंबे मैया (13.5.85)

98. मेरे जीवन की राहों को (27.6.79)

99. राजा दशरथ के अंगनवा आए ललना (1985)

100. खेलो कूदो मौज उड़ाओ (1985)

101. चल, चल, चल रंग रेलों में (1985)

102. जुदा राम मन से किया नहीं जाए (13.4.85)

103. विदाई गीत (12.3.85)

104. अंगना में धूम मचाय गयो, वो दिन आय गयो (1985)

105. तुम्हारे एहसान भूल जाए (1985)

106. ओ, अवध के प्राण रघुवर (1985)

107. तरसे जिया दिन रात रे (1985)

108. सौ बार जन्म लेकर भी कठिन है (1985)

109. विश्वास करोहे मात पिता (5.5.84)

110. न चित् में धरो नाथ (15.1.68)

111. हे नाथ! तुम्हारे चरणों में (16.1.70)

112. संतो का भेद अपार (20.5.85)

113. शिव शंकर स्तुति (16.9.69)

114. छोड़ उदासी (29.09.76)

115. खाइ के एक भंग का गोला (27.6.79)

116. श्री हनुमान-स्तुति (2.3.97)

117. श्यामा - श्यामे कीर्तन (5.5.2005)

118. बिहारी संग राधा प्यारी लगे (15.8.2008)

119. भगवान पियारे आजा (20.7.61)

120. काहे बाजे बैरन बाँसुरिया (15.7.61)

121. साँवरा सलौना घनश्याम (26.3.68)

122. मीठी बंसी बजा के साँवरिया (25.9.64)

123. मुरली सुना के न हमको सताओ (15.1.61)

124. तेरे पास कैसे आऊँ ओ साँवरे बता दे (20.9.69)

125. कान्हा दरस दिखा दे (16.12.68)

126. मटकी को तोड़ फोड़ के (1.12.68)

127. जाने मन मोहन मंदिर में (16.12.68)

128. प्यारे श्याम बसे राधा के मन में (12.7.70)

129. जमना के किनारे (16.7.70)

130. आजा तुझको पुकारे ब्रजधाम रे (23.4.72)

131. कुछ प्रेम के आँसू हैं (22.1.73)

132. भक्त मेरे हैं मैं भक्त का हूँ सदा (27.10.78)
133. आजा कन्हैया एक बार (4.6.85)
134. तेरी मुरलिया के मनहर गीत (15.10.59)
135. कर मुरली उर माल (5.7.58)
136. खेलें सखा संग होली (4.3.64)
137. तुम्हें श्याम भारत में आना पड़ेगा (21.7.64)
138. का सँग खेलूं मैं होरी (14.3.89)
139. होरी आई बरसे नए रंग रे (28.2.99)
140. होरी खेलन पधारो (9.3.2003)
141. म्हाने ब्रज को निवास प्यारो लागै (1.9.2004)
142. पग पग पै मथुरा वृदांवन होगा (9.4.01)
143. कैसे तुम्हें रिझाऊँ (20.9.07)
144. बाजी बाजी रे मुरली (1.1.72)
145. मुरली बजा के मोहन (12.10.71)
146. लोग कहें मैं इस धरती का सार हूँ (4.6.67)
147. तुम्हें फिर आज भारत वर्ष मोहन याद करता है
148. जाएँ तो जाएँ कहाँ ? (7.7.55)
149. होली खेलत नंदलाल (8.8.96)
150. बाँसुरी की मेहरबानी हो गई...!!! (3.2.63)
151. चल दिया सांवरे
152. तेरे दर्शन को जी मचलता है (7.6.65)
153. आए-आए माखन चोर (3.10.70)
154. मुरली गई है दिल चीर (4.11.80)
155. गज़ल (5.3.73)

156. गति सुनो सुनो (6.4.84)
157. तू देखती रहियो (3.10.81)
158. आए ना सांवरिया (5.10.58)
159. रंगीले-रसीले, छबीले नंदलाल (6.11.61)
160. कोई संदेश आया है
161. श्याम को हमने
162. मुरली वाले मुरली बजा
163. है ना (13.6.73)
164. झूला (2.3.70)
165. मन हर लिया हमारा (14.8.70)
166. याद आ रही है (15.2.71)
167. मतवाली राधा (11.3.70)
168. कान्हा हमको तोसे प्यार (रसिया) (16.3.68)
169. क्या लेते हो साँवरे (4.4.72)
170. चल चल चल ... (3.7.71)
171. आजा कन्हैया एक बार (3.7.73)
172. श्याम की बाँसुरी ने ... (4.3.74)
173. कितनी प्यारी तूने (10.9.72)
174. छाए हो श्याम ... (20.4.71)
175. साँवरिया - साँवरिया
176. होली (30.5.71)
177. होरी (2.2.71)
178. होरी (काफ़ी) (1.3.76)
180. वासना दूर

श्री गणेश

1. जीवन ज्योति जगाओ गणपति (10.7.83)

जीवन ज्योति जगाओ गणपति,
अंधकार में भटक रहा हूँ,
मुझ को राह दिखाओ गणपति।

* * *

निर्बल मैं बल का जग सारा,
मेरे बल बन जाओ गणपति।

* * *

डगमग डगमग जीवन नैया
मंजिल तक पहुँचाओ गणपति।

* * *

ऋद्धि सिद्धि बलबुद्धि विधाता,
निर्मल मन है आओ गणपति।

* * *

2. गणपति वंदना (25.5.99)

जय गणपति, गजवदन, विधाता,
सिद्धि-सदन, सन्मति, सुखदाता।

* * *

संकट, बाधा हरने वाले, पथ निष्कंटक करने वाले,
नित्य मुदित मन, शांति प्रदाता।

* * *

प्रथम पूज्य गण नायक देवा, सहज सिद्ध, फल, मोदक, मेवा,
जो ध्याता, मंगल वर पाता।

* * *

गौरी-सुत, गुण-गान तुम्हारा, सफल मनोरथ करे हमारा,
रहे अटल, निर्मल, यह नाता।

* * *

अर्चन, प्रबोधन, जीवन, समर्पण

3. शारदा-स्तुति (3.2.83)

ऋद्धि-दायिनि, सिद्धि दायिनि

ऋद्धि-दायिनि, सिद्धि दायिनि, बुद्धिदायिनि शारदे!
माँ! उपासक के हृदय को, मधुमयी झंकार दे।

* * *

कंठ वीणा सा मधुर हो, स्वस्थ हों अनुभूतियाँ,
अति सरल शब्दावली हो, अति मनोहर कल्पना।
रसमयी वातावरण, अभिव्यक्ति के अनुसार दे।

* * *

हों विपुल, अनुराग-मंड़ित, सफल जीवन-साधना
मुक्त मन से हम करें, कर्त्तव्य की आराधना,
चिर प्रकाशित चिर प्रशंसित, चिरसुखी संसार हो।

* * *

निष्कपट, निर्मल, निरामय, नम्र नित व्यवहार हो,
शुद्ध संचय, शुद्ध विनिमय, शुद्ध जन-अधिकार हो,
प्रगति-रत भारत मही को शांति का आधार दे।

* * *

4. मैं दासी तेरे चरणन की (23.5.79)

मैं दासी तेरे चरणन की, लगन लगी नित दर्शन की।
तू चंदा मैं तेरी चाँदनियाँ, तू हिरना मैं तेरी हिरनियाँ,
मुरली हूँ इन अधरन की, मैं दासी तेरे चरणन की।

* * *

तू जीवन, मैं साँस की डोरी, तू दिल है मैं धड़कन तोरी।
चंचलता इस चितवन की, मैं दासी तेरे चरणन की।

* * *

मैं नदिया, तू सागर प्यारा, मैं नैय्या तू मेरा किनारा,
मैं गैया तेरे मधुवन की, मैं दासी तेरे चरणन की।

***

प्रीत का बंधन टूट न जाए किस्मत हम से रूठ न जाए,
लाज रहे निर्मल जन की, मैं दासी तेरे चरणन की।

***

5. सदा संकटों में प्रभु याद आए (18.9.84)

सदा संकटों में प्रभु याद आए,
अगर दिल की धड़कन में उसको बसा लें,
तो जीवन में हम पर कभी दुख न आएं।

***

पुण्य भी ना किया, नाम भी ना लिया,
अपने सुख के लिए, पाप करता रहा,
सदा खाने पीने में, जीवन बिताया
ज़रा दुख पड़ा तो क्यों दिल तिलमिलाए।

***

हर पथिक को मिले, धूप भी छाँव भी
लाभ की मौज भी हानि के घाव भी,
वही आदमी जो न उछले, न रोए,
प्रभू के भरोसे सदा मुस्कराए।

***

हित नहीं कर सकें तो अहित ना करें,
मन, करम और वाणी निर्मल रहें।
सुखी है वही जो खुशी बाँटता है।
दुखी है वही जो प्रभू को भुलाए।

***

6. बहुत देर कर दी (10.12.85)

बहुत देर से तुम पे नज़रें लगी हैं, प्रभु आते आते बहुत देर कर दी,
मेरे देवता एक अबला की बिगड़ी, बनाते-बनाते बहुत देर कर दी।

***

सभी मौन बैठे हैं नजरें झुकाए, कोई न्याय की बात कहने न पाए,
मेरी लाज दरबार में लुट रही है, बचाते-बचाते बहुत देर कर दी।

***

दिशाएँ अँधेरी हैं तूफान भारी, भँवर में पड़ी नाथ नैया हमारी,
अनाथों के स्वामी, ये नैया किनारे, लगाते-लगाते बहुत कर दी।

***

मेरी आबरू आबरू है तुम्हारी गई आबरु अब तो आओ मुरारी,
चमत्कार अपने सुदर्शन का मोहन, दिखाते-दिखाते बहुत देर कर दी।

***

व्यथा मेरी भगवन मिटाओ तो जानूं, गरुड़ छोड़, रक्षा को आओ तो जानूं
वो ऋण प्यार के चार धामों का निर्मल, चुकाते, चुकाते बहुत देर कर दी।

***

7. सच्चा गहना (16.4.67)

सच्चा गहना प्यारी बहना, अपने अंग लगाना।

***

कर्तव्य-कंघी से जूड़ा बनाना, साहस के फूलों से उसको सजाना,
सत् की बिंदिया से माथे का भाग्य सदा चमकाना... सच्चा गहना।

***

आँखों में लज्जा का अंजन लगाना, मधुर वचन की मिस्सी बहना, दाँतों पे रचाना,
सदाचार का हार गले में शोभा का खजाना ... सच्चा गहना।

***

करुणा की अँगिया हो, धीरज की धोती, कला कुशलता के कंगनों से कर की शोभा होती
हाथों में - मेहनत की मेंहदी, प्रेम अंगूठी पाना ... सच्चा गहना।

***

पाओं में जीवन की झांझर हो बहना, है निर्मल श्रृंगार यही सन्नारी बनकर रहना
पति की प्यारी राज दुलारी, नारी-धर्म निभाना ... सच्चा गहना।

***

8. आज हुए भगवान कितने सस्ते! (4.6.67)

आज हुए भगवान कितने सस्ते, कर लो तुम पहचान रस्ते रस्ते।
गली, गाँव या बाज़ार, मूरख संसार, बेचे उसका प्यार रस्ते रस्ते।

***

मैंने एक रोज देखा गली के मोड़ पर,
थाली में बैठे साँवरा मथुरा को छोड़कर
किए चाव से सिंगार, साधू दिलदार,
बोले जय जय कर रस्ते रस्ते।

***

देखा गंगा के घाट में निराले ठाठ में
बैठे हैं भोलानाथ भी भगतों की बाट में
कोई भक्त आए द्वार, लेके उपहार
पैसे दो या चार रस्ते रस्ते

***

कथा कलियुग की कैसे सुनाएँ आपको,
बेचा है अपने हाथों से बेटों ने बाप को
बड़ा स्वार्थी संसार, निर्मल कर्तार
करना बेड़ा पार रस्ते रस्ते।

***

9. इस श्वास का क्या पता कब नहीं आए (20.6.67)

इस श्वास का क्या पता, कब नहीं आए।

***

दो दिन की जिन्दगी है चाहे जिधर लगा ले।
विषयों की मोज ले, ले या शुभ करम कमाले।
नर तन बड़ा अमोला, फिर-फिर न हाथ आए।

***

जैसा यहाँ करेगा, वैसा यहाँ भरेगा,
शुभ कर्म से चढ़ेगा, दुष्कर्म से गिरेगा,
मुश्किल है शूल बोकर, मीठे रसाल खाए।

***

कितना कठिन है निर्मल, कर्तव्य का निभाना,
शूलों की सेज पर भी, फूलों सा मुस्कराना,
हरि नाम का सहारा हर बार काम आए।

***

10. कहाँ जा रही है बता दो ये दुनियाँ (19.7.60)

कहाँ जा रही है बता दो ये दुनियाँ, दुखी बेसहारा ये कैसा जहाँ है,
इधर वासनाएँ, उधर सर्द आहें, समझ ही न आए कि मंज़िल कहाँ है।।

***

बहारें गगन में चली जा रही हैं, धरा पे अजब बेकली छा रही है,
ये मरने के साधन हैं जीवन नहीं है, कहाँ अर्चना है, कहाँ भावना है?

***

कहाँ खो गई वेद की वो ऋचाएँ, कहाँ यज्ञ की वो सुगंधित हवाएँ?
हे लगता यही कि ये दुनियाँ नहीं है, तड़पती है धरती, बिकल आसमाँ है।
मेरी कल्पना का जवाब आ रहा है, मनुज वासना में फँसा जा रहा है,
छलकती है मदिरा ये माखन नहीं है, मलिन आत्माएँ हैं, निर्मल कहाँ है।

***

11. हो गया इतना दीवाना (20.7.72)

हो गया इतना दीवाना कुछ कही जाती नहीं,
एक पल भी याद उसकी, मन को तड़पाती नहीं।

***

आसमां पर चाँद तारे राह दिखलाएँ तुझे।
चार दिन की चाँदनी है, लौटकर आती नहीं।

***

हँस रहा तेरी कुचालों पर खड़ा यह आसमाँ,
तू मगन है वासना में, रोशनी भाती नहीं।

***

छोड़कर दुष्काम, निर्मल नाम ले घनश्याम का,
पाप की नैया तो परले पार पहुँचाती नहीं।

***

12. कहीं अंधेरी रातें हैं कहीं सुहानी भोर (12.6.68)

कहीं अंधेरी रातें कहीं सुहानी भोर,
देख देख जग तेरा, मेरे मन में उठें हिलौर।

* * *

जीवन-नदिया बहती धारा-बीता दिन कब आए दुबारा।
सागर से मिल जाए मचाती हुई शोर, देख देख .....

* * *

दुख में मनुआ हरि गुण गाए, सुख पाकर सब कुछ बिसराए,
कभी बहाए आँसूं तो कभी जमाए ज़ोर, देख देख .....

* * *

जो पतझर में पात गिराए, वह तरुवर निर्मल फल पाए,
जो खोजे सो पाए, परम सुख ठौर - देख देख .....

* * *

13. राम से लौ लगा, आसरा है वही (8.2.62)

राम से लौ लगा, आसरा है वही, गर सहारा मिला पार तर जाएँगे,
वासनाओं भरी नाव, मझधार है, एक पल में ये साधन बिखर जाएँगे।

* * *

पाप की धार में नाव बढ़ती रही, मस्त मांझी भँवर में धकेले गया,
एक पतवार है राम के नाम की, वो न खोली तो बोलो किधर जाएँगे।

* * *

झूठे जंजाल का मन में तूफान है, इंद्रियों की हवा सनसनाती चले,
नाव टूटी हुई दूर तक ज्वार है, नाम ले काज बिगड़े सँवर जाएंगे।

* * *

नाम के आसरे नाव चलती रहे, पार कितने गए और तर जाएंगे
ज्योति निर्मल सदा राह दिखला रही, डगमगाए कि तूफाँ में घिर जाएंगे।

* * *

14. नाम जपन की गंगा (1.1.65)

नाम जपन की गंगा और इस जीवन की जमुना का,
बोल बंदे बोल संगम होगा कि नहीं ?

* * *

लख चौरासी जनम गँवाकर, यह जीवन अनमोल मिला
ऐसा जीवन फिर न मिलेगा, यों न इसे माटी में मिला!
दुष्कर्मों का बोझ कभी कम होगा कि नहीं ? बोल...

* * *

कितना जीवन बीत गया है, खाने में सो जाने में,
तेरे जैसा मूरख प्राणी, है कोई और जमाने में!
परमेश्वर से प्रीत का बंधन होगा कि नहीं ? बोल...

* * *

तोड़ जगत के झूठे बंधन, हरि से नेह लगा ले तू,
अपने मन का मैल हटा ले, निर्मल ज्योति जगा ले तू।
तेरा जीवन जड़ से चेतन होगा कि नहीं ? बोल...

* * *

15. वही वासनाओं का चक्कर पुराना (28.6.68)

वही वासनाओं का चक्कर पुराना, कि जिसने बनाया उसी को न जाना
तू है दीवाना, दीवाना, दीवाना!

* * *

युँ ही रात बीती युँ ही दिन गँवाया
कभी नाम उसका जुबां पर न आया,
युँही बातों बातों में जीवन बिताया,
तेरी जिन्दगी एक झूठा फ़साना, कि जिसने...

* * *

ये कलियों का जमघट, ये फूलों का मेला,
फ़कत चार दिन का है सारा झमेला,
अकेला जो आए, वो जाए अकेला,
लगा है कभी से युँ ही आना जाना, कि जिसने...

* * *

बही जाती है ये जीवन की नैया,
कहीं डूब जाए ना, सुन मेरे भैया,
खिवैया कोई है तो निर्मल कन्हैया,
बचाया है जिसने उसी ने बचाना, कि जिसने...

***

16. बहुत पास से देख ली तेरी दुनियाँ (21.7.68)

बहुत पास से देख ली तेरी दुनियाँ, यहाँ बेकसों का गुजारा नहीं है,
चपल को मिले हर कदम पर सहारा, मगर बेजुँबा को सहारा नहीं है।

***

लगी आग को जो शिखर पर चढ़ाए, वही तेज आँधी दिए को बुझाए,
नदी के लिए हर जगह दो किनारे मगर डूबते को किनारा नहीं है।

***

खिला फूल जब तक हरी डालियों पर किरण भी जगाए, पवन भी झुलाए,
मगर धूल का फूल यह कह रहा है, हमारा ही घर अब हमारा नहीं है।

***

बदी के हजारों हैं साथी यहाँ पर, मगर कौन नेकी का साथी बना है।
नरक बन गई है प्रभू तेरी दुनियाँ, सही न्याय निर्मल तुम्हारा नहीं है।

***

17. भक्तों पै सितम दुष्टों पै करम (10.7.69)

भक्तों पै सितम, दुष्टों पै करम, हे जग के धनी यह जुल्म न कर
रहन दे अभी थोड़ा सा भरम, हे जग के धनी, यह जुल्म न कर।

***

ध्रुव को वन में मिलने वाला, ऊँचे मंदिर में रहता है।
ब्रज की रज में पलने वाला, वैभव की हवा में बहता है
यह भेद भला क्या जाने हम हे जग के धनी .....

***

गउओं पै कटारी चलती है, और भक्त सताए जाते हैं
निर्बल का लहू पीने वाले, सरताज बनाए जाते हैं।
अब तो अपना दिल कर ले नरम, हे जग के धनी .....

***

संसार रचाने वाला भी, जग के हाथों में झूल रहा,
गिरतों को उठाने वाला भी अपने वचनों को भूल रहा।
निष्प्राण पड़ा गीता का मरम है, हे जग के धनी।

***

कब तक संकट टल जाएँगे, कब तक उजियारा छाएगा।
युग युग में आने वाला कब, फिर से करुणा बरसाएगा।
निर्मल कर दे जग का आँगन, हे जग के धनी .....

***

18. कुछ न बिगड़ेगा तेरा (29.4.70)

कुछ न बिगड़ेगा तेरा, प्रभु की शरण जाने के बाद।
हर खुशी मिल जाएगी, चरणों में झुक जाने के बाद।

***

जब तलक है भेद मन में कुछ नहीं बन पाएगा।
रंग लाएगा ये साधन भेद मिट जाने के बाद।

***

प्रेम की मंजिल के राही, कष्ट पाते हैं ज़रूर।
बीज फलता है सदा, मिट्टी में मिल जाने के बाद।

***

फूल से पूछो कि उस पर किस तरह आई बहार,
कब तलक काँटों पे सोया, डाल पर आने के बाद।

***

देख कर काली निशा को, ऐ भँवर मत हो उदास,
बंद कलियाँ भी खिलेंगी रात ढल जाने के बाद।

***

हो हृदय निष्काम निर्मल नाम ले घनश्याम का,
सूखी बगिया भी खिलेगी, रुत बदल जाने के बाद।

***

19. आने को जग में आएँ हजार (30.6.70)

आने को जग में आएँ हजार, जाने को जग से जाएँ हजार,
इस ज़िंदगानी का अभिमान न कर, छोटी सी जवानी का .....

* * *

याद कर कि कैसे तूने इंसान का जन्म पाया,
ये अमोल धन था, बातों बातों में तूने गँवाया।
माया के मतवाले, झूठी कहानी का ईमान न कर।
छोटी सी...

* * *

हर खुशी मिलेगी, निर्बलों को गले से लगा ले,
ज़िंदगी खिलेगी, प्रेम की ज्योति मन में जगा ले,
धर्म यही कर्म यही, निर्धन प्राणी का अपमान न कर।
छोटी सी...

* * *

ज़िंदगी की नैया, आज कर दे उसी के हवाले
वो अजब खिवैया, उसने लाखों ही पापी उबारे
गहरा जल, चल निर्मल, नाव पुरानी का कुछ ध्यान न कर।
छोटी सी...

* * *

20. झूठा वंदन झूठा अर्चन (6.7.70)

झूठा वंदन झूठा अर्चन, बिन प्रेम सभी कुछ वीराना,
भगवान कहाँ पर रहता है, तूने न अभी तक पहचाना।

* * *

वह चमक रहा जगमग जगमग, अंबर के चाँद सितारों में,
तू बाँध रहा उस ताकत को, ऊँची, नीची दीवारों में
दर्शन तुझ को कैसे होगा, वह दर्पण है तू दीवाना।

* * *

वह शूलों पर भी मुस्काए, तू फूलों पर भी रोता है,
मुस्काए गुल, रोए शबनम, सुख दुख कर्मों से होता है,
दीपक से ही जा टकराए, तम का अनुरागी परवाना

* * *

वह जीवन का संदेश लिए नित तेरे द्वारे आता है,
तू उसे भिखारी कह कह कर गाली देता, ठुकराता है,
तू देख ज़रा प्यासी भू पर बादल का फुँहारें बरसाना।

* * *

भँवरे की करुण पुकारों से नित बंद कमल खिल जाता है
प्यासे चातक की खातिर ही, अंबर अमृत बरसाता है।
जीवन का निर्मल सार यही, जिसने खोजा उसने जाना।

* * *

21. मनुआ दीवाना हुआ रे (6.7.71)

मनुआ दीवाना हुआ रे, मनुआ।
धरे नए नए भेस, फिरे विषयों के देस, रोगी पुराना हुआ रे।

* * *

कभी इसे भाए खिलौने बचपन के, कभी मीठे लागे वचन दुल्हन के
सुख पाके सोता है, दुख पाके रोता है, राही अनजाना हुआ रे।

* * *

करे रह रह के गरब इस तन का, कभी ना सुहाए, भजन, भगवन का
जिसके बल पर खाए, उसको ही बिसराए कैसा मस्ताना हुआ रे।

* * *

निशदिन देखे चलन जीवन का, जग उड़ा जाए पवन में ज्यों तिनका,
फिर भी न घबराए, इठलाके कह जाए 'पागल जमाना हुआ रे'।

* * *

रात नित ढल जाए दिन खिल जाए नित उसे निर्मल जनम मिल जाए।
फिर भी पहचाने ना, गुण उसका माने ना, पापी है माना हुआ रे।

* * *

22. बोल तेरे चाम का क्या दाम दिया जाए (11.12.71)

नाम नहीं भाए कुछ काम नहीं आए
बोल तेरे चाम का क्या दाम दिया जाए।

***

खेल ही खेल में खो दिया बचपन प्यार-सिंगार में लुट गया यौवन,
उस प्रभू के भजन में न लागा मन, वासनाओं में बीता तेरा जीवन।
अब बुढ़ापा खिला, तन का ढांचा हिला, थरथराए तन।
अन्न नहीं भाए, आराम नहीं पाए, बोल तेरे .....

***

बुलबुला एक ये जिन्दगानी है, शान निर्मल है पर आनी जानी है,
है कभी गम, कभी शादमानी है, एक सपना है झूठी कहानी है
तूने जाना नहीं, तूने माना नहीं, ये नादानी है।
थाम नहीं पाए, ये शाम ढली जाए, बोल तेरे .....

***

23. भोले प्राणी! (19.5.72)

भोले प्राणी, सुन रे भोले प्राणी,
मन के झूठे ज़ंजालों में, खो बैठा ज़िंदगानी!

***

तूने एक रतन-धन पाया, फिर भी पहचान न पाया,
कौड़ी बदले इसे गँवाया कर करके मन मानी। भोले प्राणी...

***

तेरी डगमग जीवन नैया, बहे विषयों की पुरवैया,
ना जाने कब इसे डुबो दे, कोई लहर अनजानी। भोले प्राणी...

***

यह जग माँटी की माया, मूरख इसमें भरमाया,
हरि का निर्मल नाम सुमिर ले, गर्व न कर अभिमानी। भोले प्राणी...

***

24. सतसंगत से बुरे बुरे इंसान बदल जाते हैं (15.10.74)

सतसंगत से बुरे बुरे इंसान बदल जाते हैं
काम बदल जाते हैं, परिणाम बदल जाते हैं
जीवन के सुबहो शाम बदल जाते हैं।

***

हर खुशी मिलती नहीं ज़िन्दगी की राह में,
मन भटकता है सदा, वासना की चाह में,
जो प्रभु की शरण में आ गया, वही सत्य जीवन पा गया,
मधुर मधुर वचनों से, सद्‌गुण के रत्नों से,
दिलों के अरमान बदल जाते हैं

***

शान के अभिमान में जी रहे जो रात दिन,
निर्बलों के खून को, पी रहे जो रात दिन,
घड़ी भर जो आएँ सतसंग में, तो रंग जाएँ वो भी प्रभु रंग में
शठ ज्ञानी बन जाते, पत्थर पानी बन जाते,
हठीले शैतान बदल जाते हैं।

***

मन में गर संतोष है, हर तरफ आनंद है,
पापियों के वास्ते, प्रेम का घर बंद है
अगर प्रेम निर्मल चाहिए, तो सतसंग में नित आइए
रसना हरिगुण गाए, मन में आनंद समाए,
गीतें के अनुवान बदल जाते हैं।

***

25. आसमाँ की शान हो (20.7.60)

आसमाँ की शान हो, धरती की लाज हो,
जग के हरिक सवाल का तुम ही जवाब हो।

* * *

तुम ज्योति हो ये चाँद सितारे दिखा रहे,
तुम ही बहार हो ये नजारे बता रहे,
काँटो पे जो दया करे, तुम वो गुलाब हो।

* * *

दुखियों को है तुम्हारी दया का ही आसरा,
जिसने तुम्हारा नाम लिया पार वो तरा,
जो तुमसे लौ लगाए वो क्यों नामुराद हो।

* * *

भव पार जो लगाए वो पतवार हो तुम्हीं,
निर्मल हृदय में भाव भरा प्यार हो तुम्हीं,
महिमां तुम्हारी क्या कहें तुम लाजवाब हो।

* * *

26. मन-मंदिर में आन बसो (20.1.60)

मन-मंदिर में आन बसो निर्गुण, अविनाशी रे,
जगमग जीवन ज्योति जगा दो घट घट वासी रे।

* * *

किसने जानी तेरी माया, किसने भेद तुम्हारा पाया,
हार गए जप तप करके, योगी सन्यासी रे

* * *

धरती का श्रृंगार तुम्ही हो, अंबर का आधार तुम्ही हो,
प्यार तुम्हीं संसार तुम्हीं हो, अन्तर्वासी रे।

* * *

मन-वीणां के तार तुम्हीं हो, शुभ, निर्मल झंकार तुम्हीं हो,
पर तुमको पहचानें कैसे, भूतल वासी रे।

* * *

27. दुष्टों ने हमें घेरा (28.10.78)

दुष्टों ने हमें घेरा, संकट ने सताया है,
किस्मत! तूने हम को, पग पग में रुलाया है।

* * *

तूने इस आंगन में क्या आग लगाई है,
जो दुश्मन बन बैठा भाई का भाई है
दो दिन हँसकर जीना तुझको न सुहाया है।

* * *

इस ओर अँधेरा है, उस ओर अँधेरा है,
मन को आराम नहीं और दूर सवेरा है।
आशा की किरन बनकर, कोई पास न आया है।

* * *

तूफान है सागर में दुश्मन पुरवैया है
उस पार न पहुँचेगी मंझधार में नैया है।
भगवान ने भी निर्मल, भक्तों को भुलाया है।

* * *

28. वो जो दिल में समाए जाते हैं (25.5.79)

वो जो दिल में समाए जाते हैं, मेघ अंबर में छाए जाते हैं।
और पहना के हार हम उनको, हार अपनी छुपाए जाते हैं।
रूप और रंग उनका क्या कहना, चंद्रमा को लजाए जाते हैं,
उनको फुर्सत कहाँ जो देखें इधर, लोग उनको लुभाए जाते हैं।
वो सुने या न सुनें लेकिन हम, हाल दिल का सुनाए जाते हैं।
प्रेम का तेल, चाह की बाती, नयन दीपक जगाए जाते हैं।
भाव के फूल, लगन का चंदन, आरती हम सजाए जाते हैं।
नयन मिलते ही मिल गए तन, मन, यों ही रिश्ते बढ़ाए जाते हैं।
प्रीत की रीति अजब है निर्मल, मिटके मोहन रिझाए जाते हैं।

* * *

29. मिल के रहेंगे सदा (1.12.85)

मिलके रहेंगे सदा ये वचन कर लें,
लाख बाधाएँ आएँ, न मन में हम घबराएँ, मिलके .....

* * *

हँसते मुस्काते चलें सबको हर्षाते चलें,
दीन दुखियों पे सदा, प्यार बरसाते चलें।
न मेहनत से घबराएँ, धरा को स्वर्ग बनाएँ,
दुनियां की बदलें हवा .... ये वचन कर लें।

* * *

कोई तकरार न हो, कोई दीवार ना हो,
हिंसा उन्माद भरा, अपना संसार ना हो,
हमारे दिल में तुम हो, तुम्हारे दिल में हम हों।
नफरत को कर दें विदा .... ये वचन कर लें।

* * *

अपना आधार हो तुम अपना संसार हो तुम,
अपनी जग बगिया थी खिली बहार हो तुम।
जो निर्मल तन मन होगा, सुखी घर आंगन होगा,
उसकी रहेगी दया ..... ये वचन कर लें।

* * *

30. जग जीवन की एक कहानी

जग जीवन की एक कहानी, आज हँसे कल आँखों में पानी,

* * *

तट से तरंगें मिलें तन मन खिले, जीवन खिले,
रुक ना सके नदिया दीवानी, आज हँसे .....

* * *

चंदा से रजनी मिली, अंबर खिला, धरती खिली,
पीर सुनी शबनम की जुबानी, आज हँसे .....

* * *

बगिया में भँवरा उड़ा, खुशबू मिली, रस भी मिला,
पतझर ले आई वीरानी, आज हँसे .....

* * *

सुख में जवानी जगे, निर्मल घटा प्यारी लगे,
दे आँसू ढल जाए जवानी, आज हँसे .....

* * *

31. पंकज जहाँ खिलेगा (8.5.87)

पंकज जहाँ खिलेगा, मधुकर वहीं रहेगा,
यह प्रेम की कहानी, युग युग चमन कहेगा।

* * *

गिरि की गरीयता को नदिया नकारती है,
सागर की ओर निशिदिन, सरिता का जल बहेगा।

* * *

सरिता, सरोवरों में कितना ही जल भरा हो,
एक स्वाति बूँद के हित, चातक तृषा सहेगा।

* * *

मोहन की बाँसुरी में है प्रेम का तराना,
जो भी इसे सुनेगा, घर पर न वो रहेगा।

* * *

गुल को गले लगा लो कोयल ये कह रही है
मौसम जो आज आया, वो कल नहीं रहेगा

* * *

महलों की बंदिशों में घबरा गई गुजरिया,
राधा की बाँह निर्मल, कब साँवरा गहेगा।

* * *

32. मानुष जनम अमोल है (20.5.99)

मानुष जनम अमोल है ये जान लीजिए,
हर वक्त, हर जगह पै हरि नाम लीजिए।
पग पग पे वासना से पड़े दिल को वास्ता,
अच्छा यही है दिल को ज़रा थाम लीजिए।
सुख पुण्य का प्रताप है दुख पाप का मिला,
अच्छे बुरे को आप ही पहचान लीजिए।
घेरे खड़े हैं आपको, बालक, बड़े, जवान,
दीजे कहीं पे प्यार कहीं ज्ञान लीजिए।
किस्मत बड़ी है आपको मानुष जनम मिला,
इस तन से आप ही कोई शुभ काम लीजिए।
वाणी मधुर हो आपकी, निर्मल हों सभी काम,
बस इतना कहा आप मेरा मान लीजिए।

***

33. रचे मन पगला दीवाना (12.6.97)

रचे मन पगला दीवाना, सुबो शाम विषयों का ताना बाना।
माया में हुआ है मस्ताना, सुबो शाम विषयों का ताना बाना।

***

ये बचपन में खेला जवानी में सोया, बुढ़ापे में मजबूर पग पग पै रोया,
नहीं धर्म जाना, नहीं कर्म जाना, सदा शीष पर पाप का बोझ ढोया,
पाप करे पापी मन माना, सुबो शाम .....

***

कभी निर्बलों पे न करुणा दिखाई, कभी प्रेम से उसकी महिमा न गाई,
सदा रंग रलियों के सपने सजाए सदा मौज मस्ती की नगरी बसाई।
भूलो नहीं तन को सजाना, सुबो शाम .....

***

ये संसार सारा है सतरंगा मेला, कहीं दुख का तूफाँ, कहीं सुख का रेला,
नियम ज़िंदगी का जो बोए सो पाए, बिना कर्म निर्मल है जीवन झमेला।
जाने नहीं जीवन चलाना, सुबो शाम .....

***

34. पाप ही एक दिन राम हो जाएगा (1.5.07)

भक्तों यों ही अगर मात खाते रहे, साँच का नाम बदनाम हो जाएगा,
पुण्य पिसते रहे, पाप छाते रहे, पाप ही एक दिन राम हो जाएगा,

***

फूल की आँखें शबनम से बेज़ार हैं, शूल आकाश छूने को तैयार हैं
कैकटस जब कँगूरों की शोभा बनें, खुदबखुद बाग वीरान हो जाएगा।

***

बेल तूंबे की बढ़ती रही शान से, रस निचोड़ा गया ईख के चाम से,
प्रेम का यूँही अपमान होता रहा, मतलबी और इंसान हो जाएगा।

***

न्याय में देर ही न्याय की हार है जानता इस सच्चाई को संसार है,
आस्था की तराजू अगर झुक गई धर्म निर्मल परेशान हो जाएगा।

***

35. हर विरहन की एक कहानी (4.11.2000)

हर विरहन की एक कहानी, जियरा धक् धक् आँखों में पानी।

***

ब्रज से कन्हैया गए, महाराजा हुए, फिर से ब्रज में न आए,
तिल तिल बुझ गई राधिका रानी। जियरा...

***

अग्नि परीक्षा हुई फिर भी त्यागी गई, सिया धरनि समाई
निष्ठुर होगा सारंग पाणी, जियरा...

***

मीरां विरह में जली, बनके जोगन चली, तजके महल अटारी
हँस हँस पी गई ज़हर दीवानी, जियरा...

***

तन मन विदेशी हुए, सारे रंग नए, सारे ढंग नए,
सुर को तरसे निर्मल वाणी, जियरा...

***

36. भर भर उदर जिया (19.7.60)

भर भर उदर जिया, तूने कभी न नाम लिया,
हरि सुमिरन बिन जीवन खोया, हाय, तूने ये क्या किया ?

* * *

सोया हुआ है तू है अभागा, विषयों के पीछे पीछे फिरे भागा भागा,
व्याज के बदले, मूल गँवाया, हाय तूने ...

* * *

मानुष तन का मरम न पाया, कोड़ी के बदले तूने सोना गँवाया,
जीवन पाकर पाप न धोया, हाय तूने ...

* * *

अब तो प्रभु से नेह लगा ले, निर्मल तन का लाभ उठा ले,
मौसम बीता कुछ ना बोया, हाय तूने ...

* * *

37. गज़ब हो गया (7.11.73)

जिसने खुशियों भरी जिन्दगी तुझको दी, तू उसे भूल बैठा गज़ब हो गया।
तूने उसको कभी सिर झुकाया नहीं, गर्व में फूल बैठा गज़ब हो गया।

* * *

इसलिए तुझ को इंसान का तन मिला, धन कमा, यश कमा पुण्य पथ में लगा।
तन के अभिमान में तन के तू रह गया होके प्रतिकूल बैठा गज़ब हो गया।

* * *

तेरा बल उसके बल के बराबर नहीं, फिर भी क्या उसका एहसास तुझ पर नहीं।
फूल सा तन बदन तुझको उसने दिया, बनके तू शूल बैठा गजब हो गया।

* * *

जिसके संकेत पर कुल जहाँ चल रहा, ये जमीं चल रहीं आसमां चल रहा,
तूने आधार उसको बनाया नहीं, कैसा निर्मूल बैठा, गज़ब हो गया।

* * *

जिसको केवल प्रभु का ही आधार है, उसकी नैया भँवर से सदा पार है,
ज्योति निर्मल हृदय में जगाई नहीं, तन को कर धूल बैठा गजब हो गया।

* * *

38. कितना मजा आ रहा है (1.4.74)

कितना मजा आ रहा है,
सत्संग से पुण्य पल रहे हैं, और पाप गल रहे हैं।

* * *

जीवन सौ बार हमने देखा, विषयों का सार हमने देखा,
खुशियों की खोज में महकता, दुखिया संसार हमने देखा।
संत चरण पाकर संताप टल रहे है - और पाप...

* * *

बचपन है खेल की कहानी, वासना का नाम है जवानी
घोर निराशाही बुढ़ापा है, मौत नए जन्म की निशानी,
जिंदगी के अब तो सब भेद खुल रहे हैं - और पाप...

* * *

जब से हमें नाथ ने संभाला, छा गया है हर तरफ उजाला
रंग दी श्याम रंग में चुनरिया, तन पे ऐसा प्रेम रंग डाला,
मन हुआ है निर्मल साधन बदल रहे हैं - और पाप...

* * *

39. मातृ भूमि वंदना (1973)

मातृ भूमि, पितृ भूमि, पुण्य भूमि वंदना,
वीर-भूमि, देवधरा, जय जय दुख भंजना।

* * *

दिव्य हिम किरीट भाल, शोभित उर सरित-माल
हरित वसन, नयन लाल, अति कोमल, अति कराल
आदि शक्ति, अमर ज्योति, शरणागत रंजना।

* * *

पग अनेक चाल एक, स्वर अनेक ताल एक
लपट कोटि ज्वाल एक, पुष्प कोटि माल एक।
माँ, तुम्हारी आरती की ज्योति पड़े मंद ना।

* * *

40. इन्हीं पाँचों ने हर लीना (1973)

इन्हीं पाँचों ने हर लीन्हा, ये मनुवा मेरा

* * *

पहली परटक वासनाओं ने कीन्हीं,
विषयों के बस कर दीन्हा।

* * *

दूजी चढ़ाई क्रोधवा नै कीन्हीं
नस नस में मद भर दीन्हा।

* * *

तीजी चढ़ाई लालचवा ने कीन्हीं
माया का चाकर कीन्हा!

* * *

चौथी पटक इसे मोहवा ने मारी,
ममता का घर कर दीन्हा।

* * *

पँचम पटक अहंकारवा ने मारी,
निर्मल मन मैला कीन्हा।

* * *

41. झूला तुझे झुलाऊँ (1973)

झूला तुझे झुलाऊँ, जग को झुलाने वाले,
जीवन की डोर अब तो कर दी तेरे हवाले।

* * *

माया की डालियों पर संसार का हिंडोला,
उसमें जनम मरण के झोले तेरे निराले।

* * *

निर्गुण कोई बताए कोई सगुण बताए,
खुद ही भटक रहे हैं, मारग दिखाने वाले।

* * *

तप, ध्यान, योग, साधन, तुझ को रिझा न पाएँ।
लेकिन तुझे नचाएँ, मन से बुलाने वाले।

* * *

जीवन की नाव निर्मल, मझधार में फँसी है,
चाहे इसे डुबो दे, चाहे इसे बचा ले।

* * *

42. मन मारो मन (1973)

मन मारो मन, सुधरे करम,
बोलो आठों याम, हरे कृष्णा, हरे राम।

* * *

दुनियाँ को तुमने दिया क्या, दुनियाँ से तुमने लिया क्या?
मन पे न काबू किया तो, दुनियाँ में आके किया क्या? मन ...

* * *

हँस के जिया तो जिएगा, रोके जिया तो जिएगा
अमृत भी है और ज़हर भी, तू ही बता क्या पिएगा। मन ...

* * *

अमृत प्रभु का भजन है, विष वासना की लगन है,
ये तन है निर्मल खजाना, उपकार अनमोल धन है। मन ...

* * *

43. मिलता है बड़े भाग्य से (1973)

मिलता है बड़े भाग्य से नर तन कभी कभी
आते हैं इसी वेष में भगवन कभी कभी।

* * *

जब तक ये ज़िंदगी है सभी को हँसा के जी,
हँस कर ही सुलझ जाती है, उलझन कभी कभी।

* * *

कोई बुरा नहीं है भले मन के वास्ते,
शुभ कर्म ही हो जाते हैं पूजन कभी कभी।

* * *

इंसान में भगवान में कोई फर्क नहीं,
वही ज्योति इधर आती है छन छन कभी कभी।

* * *

भगवान ने इंसान बनाकर यही कहा,
मुझ को भी सुहाता है ये बंधन कभी कभी।

* * *

निर्मल हो दिल जुबान पे हरि नाम हो सदा,
इतने ही में हो जाते हैं दर्शन कभी कभी।

* * *

44. पल पल प्रभु का नाम ले (1973)

पल पल प्रभु का नाम ले, सुख दुख में मन थाम ले,
मानुष तन अनमोल है, इस तन से कुछ काम ले। ज़िंदगी तू यूँ न गँवा।

* * *

जो सुख में उछले इतराए, दुख पड़ने पर वह घबराए,
उलझी हुई है दुई में ये दुनियाँ पल-पल।

* * *

आशा जीवन, मृत्यु निराशा, वह नायक संसार तमाशा,
जैसे नँचाए, नँचेगी नटिनियाँ पल-पल।

* * *

जब जब मनुआ हरिगुण गाए, पंकिल मन निर्मल बन जाए,
ठोड़ी लजाए निराशा पापिनियाँ पल-पल।

* * *

45. हम तुम (1973)

हम तुम, युग युग से नित घोर पतन में जाते रहे हैं, जाते रहेंगे

* * *

उस ओर ज़माना खेल रहा अंबर के चाँद सितारों से,
धरती का धीरज तोल रहा, कुछ गिने चुने हथियारों से,
इस ओर धरा धँसती जाती, भूखों, नंगों, बेकारों से।
जीवन की कीमत क्या होती पूछो किस्मत के मारों से। हम तुम...

* * *

मानव मानव में भेद यहाँ, खुद हमने तुमने डाला है,
यह शोषक है, वह शोषित है, यह गोरा है वह काला है।
निर्बल मानव का गरम खून, बलवानों ने पी डाला है,
परमेश्वर के आदर्शों पर खुद हमने पर्दा डाला है। हम तुम ...

* * *

कब तक जीवित रह पाएँगे, संघर्षों में, संघातों में,
एक रोज प्रलय हो जाएगी, इन छोटी छोटी बातों में।
मानव हो तो करुणा भर दो, मानवता के संतापों में,
निर्मल जीवन लहराएगा, फिर प्यार भरे इन हाथों में। हम तुम...

* * *

46. निष्क्रिय बैठा रहे सदा जो (1973)

निष्क्रिय बैठा रहे सदा जो मंजिल उसको छोड़ चले।
मंजिल बस उसको मिलती है, जो मंज़िल की ओर चले।

* * *

कल कल करती व्याकुल सरिता, उछल उछल बढ़ जाती है,
बाधाओं से लड़ते लड़ते, सागर से मिल जाती है।
पछताए गतिहीन किनारा, लहर लहर दिल तोड़ चले। मंजिल ...

* * *

मेहनत से सूखी धरती फिर हरी भरी हो जाती है,
श्रम से उजड़े उपवन में, ऋतु बसंत फिर आती है।
गतिविहीन पंथ के पाहन से, पथिक सदा मुँह मोड़ चले। मंजिल ...

* * *

पुष्प ओस के आँसू पीता, काँटो पर मुस्काता है,
दीपक अपना लहू जलाकर निर्मल ज्योति जगाता है।
प्यासा शिखर तरसता रहता, चातक सार निचोड़ चले, मंजिल ...

* * *

47. नाशवान तन में शोभित (1973)

नाशवान तन में शोभित चेतन अविनाशी रे,
जरा, जन्म से दूर रहे वो अन्तर्वासी रे।

***

पावक जिसको जला न पाए, पानी जिसको गला न पाए,
दूर सदा रहती है जिससे, यम की फाँसी रे।

***

धरती के जड़ चेतन सारे, जगमग करते चाँद सितारे,
सब चमकें मेरी आभा से छोड़ उदासी रे।

***

ना वो मरे न तू संहारे, फिर क्यों इतनी व्यथा विचारे,
उठ अर्जुन! क्यों धर्म तजे, बन कर सन्यासी रे।

***

जब जब होय धरम की हानी कष्ट उठाएं निर्मल प्राणी,
आते हैं तब तब धरती पर घट घट वासी रे।

***

48. उम्र छोटी है तृष्णा बड़ी (1973)

उम्र छोटी है तृष्णा बड़ी, नाम लेले घड़ी दो घड़ी।
सारे धंधे तुम्हारे तभी तक, यम की नजरें न जब तक पड़ीं।

***

खेल में सारा बचपन गँवाया, वासनाओं में बीती जवानी
अब बुढ़ापे ने सब रस निचोड़ा हार फिर भी नहीं तूने मानी
वासना की न टूटी लड़ी .....

***

श्याम की तुम पै कितनी दया है, तुझ को इंसान का तन मिला है।
मोल उसका नहीं तूने जाना, झंझटों में इसे खो दिया है
लग रही उलझनों की झड़ी .....

***

नाम लेले, भले काम करले, यश कमाने का अवसर यही है,
खो दिया ये जनम अब जो तूने, ऐसा निर्मल जनम फिर नहीं है।
मौत हरदम सिरहाने खड़ी .....

***

49. काम हर अनुपम तुम्हारा (14.6.76)

काम हर अनुपम तुम्हारा, क्या करे पहचान कोई,
कर दिए दो भाग जग के, पथ कोई पाषाण कोई।

***

एक मंज़िल के लिए साधन बने और सर झुकाए,
एक बाधा बन पथिक की, राह में उलझन बढ़ाए,
कोई जीवन ले रहा है, कर रहा बलिदान कोई। कर दिए...

***

शूल की शैया सुमन को ओस को कोमल बिछौना,
दुःख में मुस्कान भर दी, और सुख के साथ रोना,
हो रहा कोई तिरोहित, पा रहा सम्मान कोई। कर दिए...

***

मोह के मधुमास में मन-मोर मोहित हो रहा है,
तनिक सुख की आस में, अंबार दुख का ढो रहा है।
नाँचता कोई बिचारा कर रहा रस-पान कोई। कर दिए...

***

पाप को मादक छटा दी, पुण्य में सघर्ष डाला,
हर दिवस के संग रजनी, रात के माथे उजाला,
कींच में निर्मल कमल है, सुरसरी नद में डुबोई। कर दिए...

***

50. हर मुसीबत से बचाया (4.1.77)

हर मुसीबत से बचाया है तुम्हीं ने हे प्रभो!
हर मुसीबत से बचाना भी तुम्हारा काम है।

* * *

ले चला हूँ नाव भगवन्! बस तुम्हारे नाम पर,
देखना, बट्टा न लग जाए, तुम्हारी शान पर,

* * *

सामने मझधार भी है, और किनारा भी प्रभो,
ले चलो नैया बचाकर पार शुभ परिणाम पर

* * *

ज्वार की लहरें उछलकर नाव को झकझोंरती,
हे खिवैया! ले चलो तरनी संभलकर, थामकर

* * *

लग गया तूफान का झटका अगर इस नाव को
जग हँसेगा और शक होगा तुम्हारे काम पर

* * *

भक्त को हरि ने सदा निर्मल संभाला दौड़कर,
श्याम जीवन, धन हमारा, और हम हैं श्याम पर!

* * *

51. सखि! कर सोलह सिंगार (निर्गुण भजन) 18.7.77

सखि! कर सोलह सिंगार, पिया घर आएँगे!
मन रह रह करत पुकार, पिया घर आएँगे।

* * *

केशर, चंदन, इत्र लगाकर तन धोया सौ बार,
नस नस में मादकता भर दे, अंग अंग महकार,
मोरे केसन गजरा डार पिया घर आएँगे।

* * *

चंचल शाल, कसूमल सारी, गल मोतियन का हार,
मनहर का मन-मधुप रिझाने, कर कोमल कचनार,
मोरे नैनन कजरा सार, पिया घर आएँगे।

* * *

रस के लोभी मीत हमारे, मैं निर्मल रसधार,
मैं अपने प्रियतम को प्यारी, मुझ को प्रियभर्तार।
मैं तो अचल सुहागिन नार पिया घर आएँगे।

* * *

52. धीरे-धीरे ले चल मांझी (18.7.77)

धीरे-धीरे ले चल मांझी तरनी को उस पार,
रैन अँधेरी, यह पुरवैया, डगमग है पतवार।
सागर की लहरों में हलचल, तन में हलचल, मन में हलचल
कण कण को झकझोर रहा है, उछल उछल कर ज्वार।

* * *

उमड़ घुमड़ घनघोर घटाएँ, भू पर बरसें, नभ पर छाएँ,
अंधकार में भी दो नयना, तट को रहे निहार।

* * *

दो बाहों का तुझे सहारा, चाहे कितनी दूर किनारा,
चल लहरों का जिगर चीरता, होगी नैया पार।

* * *

नव प्रभात उस पार मिलेगा, मन-पंकज उस पार खिलेगा।
शूलों की शैया पर सोता, फूलों का संसार।

* * *

53. प्रेम नहीं कहलाता प्रियतम (18.7.77)

प्रेम नहीं कहलाता प्रियतम, तज देना मझधार,
दूर दूर रह कर तरसाना, यह कैसा व्यवहार।

***

याद करो उस मधुर मिलन को, श्यामल तन को चंचल मन को,
जब अंतस् की प्यास बुझाने, तुम बरसे सौ बार ..... तज देना

***

तुम्हें रिझाने ओ साँवरिया, ओढ़ी हमने हरी चुनरिया,
सूख गया फूलों का गजरा, बिखर गया सिंगार .... तज देना।

***

तुम ने दूर लगाया डेरा, हम को भी विरहा ने घेरा,
जाने किसने लूट लिया वह, हरा भरा संसार ..... तज देना।

***

आओ हे घनश्याम सलौने, जीवन बगिया में सुख बोने,
अब तो सुन लो निष्ठुर प्रियतम, निर्मल करुण पुकार।

***

54. मन कितना पगला दीवाना (7.3.78)

मन कितना पगला दीवाना, इतनी सी बात न जाना,
कि तृष्णा विकार करती है, वो ही इसे ख्वार करती है।

***

यह न अगर होती तो मन घबराता ना, जीवन में पग पग पर ठोकर खाता ना,
कभी जीत कभी हार, कभी वैर कभी प्यार, है यही इसका फ़साना ...

***

धनवानों में धन की प्यास बढ़ाती है, निर्धन में बदले की आग लगाती है।
किसी को हँसाती है, किसी को रुलाती है, कुल जग इसका निशाना...

***

यह अपनों अपनों में भेद करती है, सुख के वन में दुख के शूल उगाती है,
गली और गाँव मूं, धूप और छाँव में, इसका ही गूँजे है तराना...

***

इस ठगनी के लाखों रूप निराले हैं, गर्वीले, छलिया, चंचल मतवाले हैं
तृष्णा को जीतकर, निर्मल प्रीतकर, जीवन सफल बनाना।

***

55. गर सुख की चाहत है तुमको (5.11.78)

गर सुख की चाहत है तुमको, तो स्वारथ का बलिदान करो,
तुम दो न सहारा पापी को, कुछ धर्मी का भी ध्यान करो।

***

तुमने धन वैभव की खातिर क्यों सब से नाता तोड़ लिया?
बस संग चलेगा धर्म सदा, तुम इतना तो अनुमान करो।

***

हर रोज़ लुटाकर धन वैभव, निर्धन की दुआ तो लेते हो,
कुछ और संभालो जीवन को, सच्चे पथ की पहचान करो।

***

जीतेगा निर्मल सत्य सदा, भगवान धरम का रक्षक है,
दानी होकर मत पाप करो, इतना निर्मल एहसान करो।

***

56. तू जहाँ जहाँ चलेगा (1999)

तू जहाँ जहाँ चलेगा, यही माया साथ होगी
सुन भैया, मेरे भैया।

***

सुख साधनों की चाहत, रिश्ते बहुत बढ़ाना,
कभी याद करके रोना, कभी मिलके मुस्कराना,
उलझन भरा सवेरा, चिंता में रात होगी।

***

आशा न खत्म होगी, तृष्णा न खत्म होगी
अभिमान कम न होगा, ममता न खत्म होगी।
वही लोभ लाभ वाली, तेरे मन में बात होगी।

***

शतरंज की तरह ही, हर चाल जिंदगी की,
जो उसकी चाल समझे, बस जीत है उसी की।
बिन मोक्ष मिले निर्मल, फिर फिर से मात होगी।

***

57. माँ बाप के चरण में (23.9.73)

माँ बाप के चरण में है तन-बदन हमारा।
तैयार हूँ बता दो, क्या है हुकम तुम्हारा

* * *

ममता मिली तुम्हारी, हम फूल बन के महके,
चमका तुम्हारे दम से, सौभाग्य का सितारा।

* * *

तप, योग, ध्यान, साधन, सब कुछ तुम्हीं हमारे
नैया को मिल गया हो, जैसे कोई किनारा।

* * *

खुद जहर पी के तुमने, अमृत हमें पिलाया,
मिलता रहा सदा ही, हमको सुखद सहारा।

* * *

संतान वो ही निर्मल, कर्त्तव्य जो निभाए।
मिलता है भाग्य से ही, मानुष जनम दुबारा

* * *

58. रिमझिम बदरा बरसे री (मल्हार) (29.6.74)

सखि! रिमझिम बदरा बरसे री,
श्याम बसे जा मथुरा नगरी, नयन दरस को तरसे री।
दादुर, मोर, पपीहा बोले, कोयल कूके, मनुआ डोले।
फिर आए बदरा मन भावन, जाय कहो नटवर से री।
लतिका तरुवर संग लहराए, कली भँवर को गरवा लगाए,
आन मिलो मनमोहन प्यारे, निर्मल नयन-डगर से री।

* * *

59. पास रहे पास हैं, दूर रहे दूर (31.8.80)

दुनिया का है ये पुराना दस्तूर
पास रहे पास हैं, दूर गए दूर।
धरती के लोग सदा सामने हुजूर,
पास रहे पास हैं, दूर गए दूर।

* * *

कितनी तरंगे भगें तट के गले,
कितनों की प्रीत पले अंबर तले
दूर हुए प्रीत का घमंड हुआ चूर।

* * *

राधा कन्हैया की प्रीत थी ललाम,
श्याम रटें राधे तो राधे रटें श्याम।
बिछुड़े पर जिंदा रहें, होके मजबूर।

* * *

कितने ही आए यहाँ कितने गए,
धरती पुरानी है, रंग नित नए।
किसके लिये मंद हुआ सूरज का नूर।।

* * *

मिलने बिछुड़ने में रत है इंसान,
यादों की पंखों पर रह जाते नाम।
निर्मल परिवर्तन में किसका कुसूर ।।
पास रहे पास हैं, दूर गए दूर।

* * *

60. जान माता-पिता पे निसार (20.9.61)

जान माता-पिता पै निसार,
जिनसे जीवन मिला, फूल तन का खिला,
एक वीराने में छाई बहार।
क्या धूप में और तूफाँ में क्या,
हमको सदा उनका साया मिला,
दुख उन्होंने सहे, हमको सब सुख दिये,
दिल में ले आरजूएँ हजार।

* * *

जो भी यहाँ पर हमें दीखता,
वो सब है माता-पिता की दया।
उनकी आँखें गई ज्योति हमको मिली,
भार कैसे सकेंगें उतार।

* * *

सेवा में उनकी ये जीवन लगे
तन-मन लगे, भक्ति अर्चन लगे,
मुक्ति हमको न दो, प्यार उनका भरो।
सुन लो निर्मल हृदय की पुकार ...

* * *

61. ये राम इतना गिरा नहीं है (2.1.61)

तुम्हारे एहसान भूल जाए,
ये राम इतना गिरा नहीं है
दुखी हो माँ-बाप जिसके कारण,
वो आदमी कुछ खरा नहीं है।

* * *

जनम-जनम का अटूट बंधन,
तुम्हारा जीवन हमारा जीवन,
जो एक झटके से टूट जाए,
ये तार का सिलसिला नहीं है।

* * *

तुम्हीं तपस्या, तुम्हीं हो साधन,
तुम्हीं हो पूजन, तुम्हीं हो वंदन।
कि तुम से बढ़कर, धरा पे कोई,
उदार दिल देवता नहीं है।

* * *

तुम्हारी मर्जी से जन्म पाया,
विकास निर्मल तुम्हारी माया।
तुम्हारी आज्ञा से प्राण जाएँ,
तो जन्म अपना बुरा नहीं है।

* * *

62. जाने इंसान को आज क्या हो गया (22.5.87)

जाने इंसान को आज क्या हो गया,
ज्ञान विज्ञान में जगमगाने के बाद।
जल रहा वो किसी की खुशी देखकर,
हँस रहा वो किसी को जलाने के बाद।

* * *

चाँद, सूरज, सितारे, पवन, जल, जमीं,
जी रहे हैं सभी प्यार की जिंदगी।
आदमी बेरहम बेवफ़ा हो गया,
प्यार देता नहीं, प्यार पाने के बाद।

* * *

फूल में आज भी रूप है, गंध है,
प्यार भँवरे का भी फूल के संग है।
चहचहाते हैं खग आज भी प्यार से,
डाल पर हर सुबह जाग जाने के बाद।

* * *

दिल मिला था उसे प्यार करके जिये,
जी रहा वो मगर दिल में नफरत लिये।
बेझिझक खून करता है निर्दोष का,
कोई झूठा बहाना बनाने के बाद।

* * *

सुख धरा का चुरा, चैन सागर का ले,
चाहता अब सितारों की छवि छीन ले।
दिल जो निर्मल नहीं तो कहीं सुख नहीं,
सुख मिलेगा उसे दिल मिलाने का बाद।

***

63. चले-चलो (4.3.67)

इंसानियत की ज्योति जगाते चले चलो।
दुनिया से दुःख दर्द मिटाते चले-चलो।

***

पीड़ित गरीब लोग खुशी उनसे दूर है,
जीवन में अंधकार जिगर ग़म से चूर है।
इनसे करे जो प्यार वही कोहेनूर है;
दुखियों के दिल में प्यार बसाते चले-चलो।

***

दुनिया से प्रीत दोस्ती कब की विदा हुई,
हर तरफ दीखती है जलन और बेरुखी।
धरती कभी जो स्वर्ग थी शमसान बन गई,
उजड़े चमन में फूल खिलाते चले-चलो।

***

जुल्मो सितम से आज मनुजता उदास है,
धरती गगन सभी को मुहब्बत की प्यास है।
संसार का पशुता ने किया सर्वनाश है,
प्यासे हृदय में आस जगाते चले-चलो।

***

धरती धधक रही है, दुखी आसमान है,
इंसानियत ही आज सिरफ बेजुबान है।
इंसान है वही जिसे निर्बल का ध्यान है,
निर्मल डगर में प्राण लुटाते चले चलो।

***

64. नहीं भेद पाया (5.7.54)

अजब तेरी लीला, अजब तेरी माया।
नहीं भेद पाया, नहीं भेद पाया।

***

कहीं तूने संसार में सुख बनाया,
कहीं दुःख दर्दों का दरिया बहाया।
किसी को हँसाया, किसी को रुलाया,
नहीं भेद पाया, नहीं भेद पाया।

***

कहीं पर बहारें चली आ रही हैं,
कहीं नाव मझदार में जा रही है।
कहीं मेहरबानी, कहीं कहर ढाया,
नहीं भेद पाया, नहीं भेद पाया।

***

ये रो-रो के कहता है टूटा हुआ दिल,
नहीं आज मालिक जमाने के काबिल।
मगर नाम निर्मल कहाँ से उड़ाया,
नहीं भेद पाया, नहीं भेद पाया।

***

65. ना इतना भुलाना (2.6.66)

दुनिया में आके ना इतना भुलाना
झूठी है दुनिया, झूठा जमाना।

***

इस जग की यह रीत पुरानी,
बचपन बीता आई जवानी।
प्रीत भरा हर गीत सुहाना।

***

दो दिन के रंगीन नजारे,
बीत गए जो सपने प्यारे,
इस पंछी का कौन ठिकाना।।

***

कुदरत ने क्या जाल बिछाया,
फँस कर कोई भाग न पाया।
पच हारा पर भेद न जाना।।

***

जीवन भी इक सुंदर छल है
बाहर निर्मल, भीतर मल है।
जो समझा वो चतुर सयाना।।

***

66. एक मानव दो-दो जुल्म करे (18.7.60)

इक मानव दो-दो जुल्म करे
इक पाप करे, इक नाम न ले।
अपने हाथों विषपान करे,
इक पाप करे, इक नाम न ले।

***

जिस नाम से लाखों लोग तरे,
बस नाम वही तो है अपना,
संसार बसाने वाले समझ,
यह सत्य नहीं, यह है सपना
क्यों श्याम का आँचल थाम न ले।

***

ईश्वर का नाम भुला तूने,
विषयों से नेह लगाया है।
काँटे बो-बो कर आम मिले,
यह दुर्लभ है, यह माया है,
निर्मल होकर निर्वाण न ले।

***

67. हाय! तूने ये क्या किया (19.7.60)

भर-भर उदर जिया, तूने कभी न नाम लिया
हरि सुमिरन बिन जीवन खोया, हाय! तूने ये क्या किया।

***

सोया हुआ है, तू है अभागा,
विषयों के पीछे-पीछे फिरे भागा-भागा।
ब्याज के बदले मूल गँवाया, हाय! तूने ये क्या किया।

***

मानुष तन का मरम न पाया,
कोड़ी के बदले तूने सोना गँवाया।
जीवन पाकर पाप न धोया, हाय! तूने ये क्या किया।

***

अब तो प्रभु से नेह लगाले,
निर्मल तन का प्राणी लाभ उठा ले।
मौसम बीता कुछ न बोया, हाय! तूने ये क्या किया।

***

68. समझ ही न आए कि मंजिल कहाँ है (19.7.60)

कहाँ जा रही है, बता दो ये दुनिया,
दुखी, बेसहारा ये कैसा जहाँ है।
इधर वासनाएँ उधर सर्द आहें,
समझ ही न आए कि मंजिल कहाँ है।

***

बहारें गगन में उड़ी जा रही हैं,
धरा पे अजब बेकली छा रही है।
ये मरने के साधन हैं, जीवन नहीं है
कहाँ अर्चना है, कहाँ भावना है।

***

कहाँ रह गई वेद की वे ऋचाएँ,
कहाँ यज्ञ की वो सुगंधित हवाएँ,
है लगता यही कि ये दुनियाँ नहीं है,
तड़पती है धरती, विकल आसमाँ है।

***

मेरी कल्पना का जवाब आ रहा है,
मनुज वासना में फँसा जा रहा है।
छलकती है मदिरा, ये माखन नहीं है,
मलिन आत्माएँ हैं, निर्मल कहाँ है।

***

69. निर्मल जीवन (03.9.70)

ये जग क्या इक सपना है,
सपने में क्या अपना है।
जो जग को अपना कहता है,
वो सपने में ही रहता है।।

***

परम तत्व का अंश जीव कहलाता है,
कर्मों से तन के बंधन में आता है।
ये तन क्या इक बंधन है,
बंधन में आकर्षण है।
जब तक ये बंधन रहता है,
मन विषयों में ही बहता है।

***

जन्म लिया है तो कर्त्तव्य निभाएँ हम,
जियें और जग को जीना सिखलाएँ हम।
जीवन क्या इक साधन है,
साधन ही निर्मल धन है।
जब तक ये साधन रहता है,
ये जीवन जीवन रहता है।

***

70. आदमी बेवफ़ा बन गया है (4.10.71)

तेरी कुदरत वही की वही है, आदमी बेवफ़ा बन गया है।
ये तेरे ही करम का सिला है, एक ज़र्रा खुदा बन गया है।

***

सबके कर्मों की सीमा बनाकर, एक दिन तूने ये जग रचाया,
जल, गगन, भू, हवा, आग, पानी, सबको जीवन का मारग बताया
और सब तो नियम मानते हैं
आदमी बेहया हो गया है।

***

कैसा धीरज धरा ने दिखाया, कैसी सागर में गंभीरता है।
चाँद, सूरज सितारों की झिलमिल, कैसी बादल के दिल में दया है।
आज इंसान इंसाँ नहीं है,
जुल्म की इन्तहा बन गया है।

***

इसने धरती की छाती को छेदा, आग पानी में इसने लगाई।
दीन दुखियों के आँसू न पौंछें, चाँद तारों पे नजरें जमाई।
भावना इसकी निर्मल नहीं है
ये स्वयं वासना बन गया है।

***

71. वीर हो हिन्दुस्तान के (4.4.85)

वीर हो हिन्दुस्तान के, रक्षक हो इंसान के,
संकट से घबराना ना, अपना शीष झुकाना ना, जग को स्वर्ग बना जाना।

***

दुनियां है बलवानों की, तोपों और विमानों की,
इस धरती पर प्यार नहीं, पहले सा संसार नहीं,
लड़ना है तुमको उनसे, पीड़ित है धरती जिनसे,
निर्बल के आधार बनो, धरती के शृंगार बनो,
तुम कायर कहलाना ना, जग को स्वर्ग बना जाना।

***

जब से आज़ादी आई, जग की नजरें ललचाईं,
पर्वत की मालाओं से, सागर से, सरिताओं से,
उमड़ घुमड़ दुश्मन आए, संकट के बादल छाए,
तुमने उनको ललकारा, दुश्मन का दल-बल हारा।
वह इतिहास भुलाना ना, जग को स्वर्ग बना जाना।

***

धरती माँ का प्यार भुला, मानव नभ की ओर चला,
प्रलयंकर हथियारों से, फौलादी टंकारों से,
यह धरती थर्राई है, मानवता घबराई है,
उठो देश के परवानो, माँ की निर्मल संतानों,
झूठा पथ अपनाना ना, जग को स्वर्ग बना जाना।

***

72. कितना प्यारा अपना हिन्दुस्तान है (3.9.85)

कितना प्यारा अपना हिन्दुस्तान है
हमें गर्व है हम धरती के राजमुकुट की शान हैं।

***

उत्तर में गिरिराज हमारे गौरव का रखवाला है,
दक्षिण में छलछल लहराता वह सागर मतवाला है।
अपने गौरव के रखवाले, अपने चारों धाम हैं। हमें गर्व है ...

***

इसकी शोभा, इसकी गरिमा तीन लोक से न्यारी है,
यह तो कुदरत के आँगन की हरी भरी फुलवारी है।
वैभव का भंडार संजोए, इसकी धरा महान है। हमें गर्व है ...

***

उठो, और जग को दिखला दो, हम इसके रखवाले हैं,
हँसते हँसते मातृभूमि पर सीस चढ़ाने वाले हैं।
लाल, जवाहर, हीरे-मोती सैनिक और किसान हैं। हमें गर्व है ...

***

अपने श्रम से, अपना वैभव, अपनी शक्ति बढ़ाएंगे
क्रांति ज्वाल में जलते युग पर शांति-सुधा बरसाएंगे।
जग मलीन क्यों रहे कि जब जीवित निर्मल इंसान हैं। हमें गर्व है ...

***

73. अपने वतन की जमीं महान है (24.4.85)

अपने वतन की जमीं महान है, मोतियों जड़ा ये आसमान है
देश के निवासियो, भेदभाव छोड़ दो, मेल तुम्हारा वतन की जान है।

***

रत्न जड़े साँझ और प्रभात हैं, चाँदी सोने के दिवस-रात हैं
ऋतुओं के रंग अपने साथ हैं, अपना सौभाग्य अपने हाथ है।
धन उगल रही जमीं, धान की कमी नहीं, देव-धरा स्वर्ग के समान है।

***

एक दिन हमारे सर पे ताज था, जल, धरा गगन पे अपना राज था,
जब न कहीं प्यार का रिवाज था, तब भी यहाँ शुद्ध राम-राज था।
अब कहाँ गए वो दिन, जग दुखी है प्यार बिन,
जिन्दगी हताश, बेजुबान है।

***

लूटपाट, वैर, घृणा त्याग दो, खुद जियो, सभी को अपना भाग दो
हर जुबाँ को प्यार भरा राग दो, मातृभूमि को अचल सुहाग दो।
देश के लिए जियो देश के लिए मरो, देश एक है तो अपनी शान है।

***

74. मरे जो देश के लिए (1985)

मरे जो देश के लिए प्रणाम उस जवान को,
जिए जो देश के लिए, प्रणाम उस किसान को,

***

डिगा नहीं सकें जिसे ज़हर उगलती गोलियाँ,
डरा नहीं सकें जिसे, कहर मचाती टोलियाँ,
वतन पे हँसके वारते, जवान अपनी जान को।

***

उगल रही है स्वर्ण धरा जिसके बल प्रताप से,
सनाथ पुण्य भूमि है किसान के कलाप से,
भुला सकेगा कौन भला मौन रक्त-दान को।

***

परिश्रमी किसान अपने भाग्य का प्रमाण है,
पराक्रमी जवान मातृ भू की आन बान है।
प्रणाम वीर भूमि के जवान को, किसान को।

***

75. आज देश को नवीन प्राण चाहिए (1985)

आज देश को नवीन प्राण चाहिए, हर कदम चरित्र का प्रमाण चाहिए।

***

आई है स्वतंत्रता बड़े प्रयास से, हम निकल के आए हैं प्रचण्ड त्रास से,
अधखिली स्वतंत्रता को त्राण चाहिए।

***

तोड़ फोड़, लूटपाट, आज किसलिए? घृणित वर्ग जन्य नित प्रमाद
किसलिए?
एक दिल हमारा एक जुबान चाहिए।

***

अज्ञता, दरिद्रता न शेष हो यहाँ, प्रेम सच्चरित्रता विशेष हो यहाँ,
साहसी किसान नौजवान चाहिए।

***

व्यक्ति के लिए न राष्ट्र को भुलाइए, कर्म निष्ठ, ध्येय निष्ठजन बनाइए,
व्यक्ति व्यक्ति देश का महान चाहिए।

***

76. ज़िन्दगी की हर खुशी (1983)

ज़िन्दगी की हर खुशी अब हो गई हासिल मुझे।
चरण में माता-पिता के मिल गई मंजिल मुझे।

***

हर दिशा जगमग हुई, हर तरफ मधुमास है,
क्यों करूँ जपध्यान में, स्वर्ग मेरे पास है।
मिल गया इनकी खुशी में, जिन्दगी का फल मुझे।

***

डाल है माता-पिता, मुस्कराता फूल मैं,
ये मेरी पावन धरा, हूँ धरा की धूल मैं,
ये अगर सागर तो समझो, झूमता बादल मुझे।

***

जब तलक जिन्दा रहूँ, पास हों माता-पिता,
आस हो माता-पिता, हर साँस हो माता-पिता,
इनकी पावन चरण रज ने, कर दिया निर्मल मुझे।

***

77. करते करते काम (1985)

करते करते काम रखे जो मन में मूरत राम की
पग पग पर मिलती है उनको, अनुकंपा भगवान की।
सुख दुख में संकट में जिनको लगन रहे प्रभु नाम की
स्वयं रहा करती है प्रभु को चिंता उनके काम की
गज, शबरी, सुग्रीव, विभीषण सबने प्रभु का नाम लिया
तुरत सहारा दिया राम ने गिरता जीवन थाम लिया,
सदा रही है गूढ़ मित्रता, भक्त और भगवान की। पग पग .....

***

राम नाम का लिए सहारा हनुमत सागर पार गए,
लाए सिया सुधि लंक जलाई घोर निशाचर मार दिए,
स्वयं राम से भी बढ़कर है महिमा उनके नाम की। पग पग .....

***

तैर रहे सागर पर पत्थर देखो कितनी शान से,
काम असंभव भी बन जाते, प्रभु के निर्मल नाम से,
काम करो ले नाम राम का, क्या चिंता परिणाम की । पग पग .....

***

78. तुम्हीं मेरा तन मन (15.9.84)

तुम्हीं मेरा तन मन, तुम्हीं मेरा जीवन, तुम्हीं आत्मा हो,
धरा, जल, गगन में, अगन में पवन में, तुम्हीं हर जगह हो।

* * *

चरा चर जगत में तुम्हारी छटा है, सभी पर तुम्हारी सदा ही दया है।
तुम्हीं जीव बनकर सभी में रमे हो, मेरे मन के मालिक, मेरे देवता हो।

* * *

मुझे अपने चरणों में भगवन! बिठा लो, तुम्हारी धरोहर है, तुम ही संभालो,
मेरी प्रीत निर्मल, तुम्हारे हवाले, तुम्हीं दर्द हो और तुम ही दवा हो।

* * *

79. जग में आके (25.1.81)

जग में आके, कुछ न कमाके, जीवन लुटा के चल दिए
ओ मतवाले! यह तो बता दे, जनम लिया था किसके लिए

* * *

खाया पीया, तन को धोया, सुख में सोया, संकट में रोया,
विषयों में दीवाना हुआ है।
धन के पीछे मान लुटाया, माया में भगवान गँवाया,
प्रियतम से बेगाना हुआ है।
कि तेरे जैसे हजारों आए, जो सिर फिरा के चल दिए।

* * *

चंचल बचपन, मस्त जवानी, जीवन की हर बात सुहानी,
निकल गए ज्यों नदिया का पानी।
धर्म न जाना, कर्म न जाना, सत संगत का मर्म न जाना
पाप कमाया भर जिंदगानी।
ये भक्त तन के, गुलाम मन के, जनम लुटा के चल दिए।

* * *

यह जग सारा, कर्मों का मारा, कहीं तरंगें, कहीं किनारा
कहीं पे आँसूं, कहीं खुशी है।
हज़ारों संकट, कदम कदम पर, कभी न आए थकान मन पर
अजीब जंजाल जिन्दगी है।
वही यहाँ खुशनसीब निर्मल, जो नाम पाकन चल दिए।

* * *

80. कारे बादरवा आए (1.8.84)

कारे बदरवा आए!
कर सिगार धरती की दुल्हनियां मंद, मंद मुस्काए।
सीस श्वेत फूलों का गजरा माथे कमल सुहाए
चंपक माल गुलाब के कंगना, हरी चुनर लहराए।

* * *

सारस की पाँतों का हरवा, साजन को पहिनाए,
झूम झूम घनश्याम सलौने रिमझिम रस बरसाएँ।

* * *

डाली डाली फूल खिले हैं, झूला पवन झुलाए,
तरुवर तरुवर पंछी बोले, निर्मल रुत मन भाए।

* * *

81. पावन प्रेम-वाटिका में तुम! (28.11.83)

पावन प्रेम-वाटिका में तुम कुसुमाकर सम आए,
फूल खिले, कलियां मुस्काईं, पात पात लहराए।

* * *

हुए स्वप्न साकार सुनहरे, आंगन में अरुणाई,
शैशव बीता, मदिर, लजीली, सम्मुख है तरुणाई।
मन की वीणा, मधुर स्वरों में, गीत मिलन के गाए।

* * *

मानो चंदा मिला किरन को, लतिका को तरु प्यारा,
मेघ मिला मानों मयूर को मधुमय मिलन हमारा।
प्रिय! तुमने नव रश्मि पुंजसम, मन के कमल खिलाए।

* * *

तुम चंचल जल के निर्झर, हम निश्चल मौन किनारे,
तुम मंथर बहते समीर हम, सौरभ सजन तुम्हारे,
अचल हमारा प्रेम कल्प-तरु, जो न कभी मुरझाए।

* * *

अभिनंदन, अभिनंदन प्रियतम, नयन द्वार से आओ,
देव! हमारे मन मंदिर को अपना सदन बनाओ।
प्रेम तुम्हारे परस मात्र से जग निर्मल बन जाए।

***

82. जब नाम लिया तो डरना क्या (3.12.67)

जब नाम लिया तो डरना क्या
नाम लिया शुभ काम न छोड़े
और हमें फिर करना क्या ?

***

सागर में तूफान उठा है, लहरों में घमसान मचा है
जीवन नैया डगमग डोले, माँझी भी अलमस्त पड़ा है
नाम का चप्पू हाथ में ले ले, डरते डरते मरना क्या।

***

नाम का दामन छूट न जाए, प्रेम की डोरी टूट न जाए,
तूफानों से टक्कर खाकर भाग्य हमारा फूट न जाए।
निर्मल नैया, श्याम खिवैया, भव सागर से तरना क्या ?

***

83. सब ने छेड़ा है (15.1.78)

सब ने छेड़ा है, सताया है दाने दाने को, एक बस तूने उबारा तेरे दीवाने को।

***

भक्त प्रहलाद को खुद बाप ने सताया था, पहाड़ से गिराया, आग में जलाया था।
खाल उसकी खिंचवाई, बेड़ियां भी पहनाई, सलाखों से पिटवाया, खंब से बाँध गिराया।
हर सितम दुष्ट ने ढाए उसे झुकाने को, एक बस तूने...

***

जहर मीरा ने पीया, नाग की पहनी माला, उसके महलों को भी, राणा
ने लगाया ताला। वो गिरिधर की मस्तानी, फिरी बन वन दीवानी,
नाँचती मंदिर मंदिर, लगन थी उसके अंदर।
तरस आया न कभी भक्त पे जमाने को, एक बस तूने ...

***

फँस के जूए में पांडवों ने द्रौपदी हारी, खींचने चीर लगा दुष्ट दुशासन भारी
भीम, अर्जुन बलशाली, न कर पाए रखवाली, पुकारी 'हे बनवारी!'
बचाओ लाज हमारी।
तुझको आना ही पड़ा चीर में समाने को, एक बस तूने ...

***

कभी साँवल बने नरसी का भात भरने को,
कभी नाई बने नंदा का कष्ट हरने को।
न अपना कोई साथी, बुझी आशा की बाती।
अँधेरा दूर भगाओ, उजाला हमें दिखाओ।
दर पे आया तेरे निर्मल व्यथा सुनाने को, एक बस तूने ...

***

84. भक्त मेरे हैं मैं भक्त का हूँ सदा (27.10.78)

भक्त मेरे हैं मैं भक्त का हूँ सदा भक्त के हरवचन को निभाता हूँ मैं
प्रेम के कच्चे धागों से बाँधा हुआ, नाम लेते ही झट दौड़ा आता हूँ मैं।

***

गर्म लोहे के खंबे से प्रहलाद को, कस दिया दुष्ट ने मारने के लिए,
खंब को फाड़ डाला, बचाया उसे, इस तरह भक्त का दुख मिटाता हूँ मैं

***

द्रौपदी की व्यथा याद होगी तुम्हें, लुट रही थी खड़ी बीच दरबार में,
चीर खिंचता गया अंत आया नहीं, लाज भक्तों की ऐसे बचाता हूँ मैं।

***

बन के चेता कभी जूतियां गाँठतां, बनके नंदा कभी पाँव में चांपता।
कोई निर्मल हृदय से बुलाए मुझे, बेर झूठे भिलनियाँ के खाता हूँ मैं।

***

85. हैं हम तुम से दूर कितने (25.3.83)

हैं हम तुम से दूर कितने, ये हम नहीं जानते,
मगर चाहते सुख तुम्हारे बिनां।
हैं हम बेशऊर कितने ये हम नहीं जानते,
दरश चाहते हैं पुकारे बिना।

***

कदम सत्य पथ पर बढ़ाते नहीं।
गरीबों का दुखड़ा मिटाते नहीं,
कि निर्दोष जीवन बिताते नहीं।
हम मंजिल से दूर कितने, ये हम नहीं जानते,
चढ़ा चाहते हैं सहारे बिना।

***

चमकता है सूरज तो मचले पवन,
पवन सनसनाए तो झूमें सुमन,
सुमन लहलहाए तो महके चमन।
है कण कण में नूर कितना ये हम नहीं जानते,
खिला चाहते हैं सँवारे बिना।

***

बरसता है बादल सभी के लिए,
है धरती का आँचल सभी के लिए,
मगर जी रहे हम खुदी के लिए।
है खुद पर गरूर कितना, ये हम नहीं जानते,
उसे भूल बैठे विचारे बिना।

***

अगर हम को उसकी दया चाहिए,
तो निर्मल हृदय में जगह चाहिए,
मेरे राम को और क्या चाहिए,
है अपना कसूर कितना, ये हम नहीं जानते,
मिलन चाहते हैं पियारे बिना।

***

86. नमो चण्डिका (भुजंग प्रयात छंद) (2.4.61)

नमो चण्डिका, मंगला, भद्रकाली
सदा सर्वदा भक्त संताप हारी।

***

सुमाता सुजाता, सुज्ञाता तुम्हीं हो,
जगद्व्यापिनी दुःख नाशा तुम्हीं हो,
सभी देव गाएँ, सुगाथा तुम्हारी।

***

घटा में तुम्हारी छटा सोहती है,
सभी के दिलों को सदा मोहती है,
शुभे! चंडिके! ज्योति निर्मल तुम्हारी।

***

87. ये कैसी निठुराई (5.2.75)

ये कैसी निठुराई, जो अब तक दया न आई,
मेरा व्याकुल मन घबराए।
तेरी तनिक दया के वास्ते, मैंने रो-रो नैन गँवाए।।

***

हे महिषासुर मर्दिनी, तेरा इतिहास पुराना,
देवों ने ममता देखी, दुष्टों ने बल पहिचाना।
धर्म हेतु युग-युग में तूने लाखों दुष्ट खपाए।
तेरी तनिक ...

***

जो भी जग में हो रहा, वह सब तेरी ही माया,
कण-कण में तू रमी हुई, तुझ में संसार समाया।
जग से भिन्न कहे जो तुझको वह कुछ समझ न पाए।
तेरी तनिक ...

***

तेरे जन के शीष पर, संकट के बादल छाए,
तेरी अनुकंपा बिन मैया, बिगड़ी कौन बनाए
दया करो घनघोर घटा भी निर्मल जल बरसाए।
तेरी तनिक ...

***

88. तेरी अमर कहानियाँ (16.6.73)

गुण तेरे गाऊँ, मैया शीष मैं झुकाऊँ
सारे जग को सुनाऊँ अंबे, तेरी अमर कहानियाँ-2
जल में दीखे, थल में दीखे तेरी मेहरबानियाँ।।

***

चंड-मुंड सहारे, पापी शुंभ-निशुंभ विदारे,
महिषासुर से दुष्ट पछारे, निश्चर मारे, देव उबारे
शिखर-शिखर पर फहरे फर्-फर्
तेरी ही निशानियाँ।

***

अकबर दौड़ा आया, तेरा सुंदर भवन बनाया
चरणों में सीस झुकाया, सोने का छत्र चढ़ाया
तुझे मनाया पुण्य कमाया,
छोड़ी मनमानियाँ।

***

जय-जय मंगल वरनी, जय भक्तों के दुख हरनी,
जंगल में मंगल करनी, सीस नवाएँ अंबर धरनी
निर्मल पावन, परम सुहावन,
तेरी मीठी वाणियाँ।

***

89. जय अम्बे जय जय जगदंबे!

मैं भी आया द्वार तिहारे, भर दे झोली खाली,
तेरी जगमग ज्योति निराली, ओ पर्वत वाली।
जय अंबे, जय जय जगदंबे, जय चांमुडा काली।
तेरी जगमग ज्योति निराली, विंध्याचल वाली।

***

जब जब देव दनुज के भय से कांपे और घबराए,
तब तब नाना रूप बनाकर, पापी दुष्ट खपाए।
अपने भक्तों की रक्षा को, प्रगटी खप्पर वाली,
तेरी जगमग ज्योति निराली।

***

जो भी आया शरण तिहारी, तुझसे आस लगाई,
अभयदान दे उसको मैया, बिगड़ी बात बनाई।
मुझ पर भी करुणा बरसा दे, कर मेरी रखवाली।
तेरी जगमग ज्योति निराली।

***

भटक चुका हूँ दर-दर मैया, मैं निर्बल दुखियारा,
डगमग जीवन नैया निर्मल, मिला ना कोई किनारा।
हो जाए यदि कृपा तिहारी, हटे अमावस काली,
तेरी जगमग ज्योति निराली, विंध्याचल वाली।

***

90. अम्बे मैया (4.7.82)

अंबे मैया!
आए तेरे द्वारे हम, छुपाए मन में कितने गम।
ये नैना बरस रहे छम-छम।

***

जितना जग के पीछे भागे, जग ने हमें ठुकराया,
स्वारथ का संसार देखकर, व्याकुल मन घबराया।
सुनो जगदंबे मैया, भँवर में डूबे नैया।
कर दो कर दो जरा सा करम।

***

सभी ओर घनघोर अँधेरा, पंथ नज़र ना आए,
पग-पग पर माया ठगनी ने, कितने जाल बिछाए।
दया की ज्योति जगा दे, हमें भी राह दिखा दे।
तू अमावस को कर दे पूनम।

***

जब जब कोई भूला भटका, द्वार तिहारे आया।
सब अपराध क्षमा कर उसको चरणों में बिठलाया।
तू ही सच्ची महतारी, क्षमा हो भूल हमारी।
तेरे दर के भिखारी हैं हम।

***

पूत-कपूत भले हो जाए, होय न मात कुमाता,
कितना पावन, कितना निर्मल। माँ बेटे का नाता।
जरा करुणा बरसा दे, सलौनी छवि दिखला दे।
तेरी ममता न हो जाए कम।

***

91. मैय्या तेरे भक्तों का (10.7.83)

मैया तेरे भक्तों का दिल है दीवाना मस्ताना
तूने नहीं देखा, तूने नहीं जाना।

* * *

ऊँचे-ऊँचे पर्वत, टेढ़ी मेढ़ी राहें, थकते हैं पाँव जहां, रुकती निगाहें।
फिर भी रुके ना आना जाना। तूने . . .

* * *

मैया तेरी दुनियाँ के रंग निराले, फलते हैं लोग यहाँ दुष्कर्म वाले।
सत बेसहारा, बेगाना! तूने . . .

* * *

जब अपनी हार देखें, आँख भर आए, जब तेरा प्यार देखें, झूम झूम गाएँ।
दर्द भरा है ये तराना, तूने . . .

* * *

यही आस लेके मैया, आया तेरे द्वारे, जग ठुकराए तो मैया दुलारे।
निर्मल मन नजराना। तूने . . .

* * *

92. जब जब सितम होंगे (21.2.80)

जब जब सितम होंगे, चरणों में हम होंगे,
माँ! दर पै तेरे, हम खड़े फरियाद करेंगे, तुझे याद करेंगे।

* * *

जब जब दुष्टों ने संसार उजाड़ा है, उन्हें खपाने चमका खड्ग तुम्हारा है,
माँ के वही हथियार फिर इमदाद करेंगे। तुझे याद करेंगे।

* * *

भक्त दुखी दुष्टों के अत्याचारों से, गगन फटा निर्बल की चीख पुकारों से
आजा कि पापी घर तेरा बर्बाद करेंगे। तुझे याद करेंगे।

* * *

माँ का मन तो कोमल निर्मल होता है, इसीलिए करुणा से बोझिल होता है।
तेरी दया से, फिर ये घर आबाद करेंगे, तुझे याद करेंगे।

* * *

93. तेरी करुणा अगर मुझ पर ऐ मां एक बार हो जाए (27.6.79)

तेरी करुणा अगर मुझ पर ऐ मां एक बार हो जाए,
तो मेरी डूबती नैया, भँवर से पार हो जाए,

* * *

मैं कितनी आस लेकर मां तेरे दरबार में आया,
बिठाले अपने चरणों में, मेरा उद्धार हो जाए।

* * *

मुझे संसार में भेजा तो जग अनुकूल कर मेरे,
कहीं ऐसा न हो जीवन मेरा बेकार हो जाए।

* * *

असंभव भी तुम्हारे नाम से संभव बने पल में,
तुम्हारा नाम ही केवल, मेरा आधार हो जाए।

* * *

कटें सब रोग, दुख, संकट, करो ऐसी कृपा मैया,
मेरा उजड़ा हुआ संसार फिर गुलजार हो जाए।

* * *

सँजोई गूँथकर शब्दों में निर्मल वेदना मन की,
कसकते तार वीणां के, मधुर झंकार हो जाए।

* * *

94. मुसीबत का मारा ... (19.2.80)

मुसीबत का मारा, तेरे दर पे आया, मेरे संकटो को मिटाना पड़ेगा,
भंवर में भटकता रहा है जो अब तक, वो बेड़ा किनारे लगाना पड़ेगा।

* * *

अँधेरे में तू रोशनी बनके आई, निराशा में, मैया खुशी बन के आई,
ये जग दे रहा है तुम्हारी दुहाई, चमत्कार फिर से दिखाना पड़ेगा।

* * *

तरेरी निगाहें, तो निश्चर खपाए, उठाई जो बाहें तो सेवक बचाए,
यही आस लेकर तेरे दर पै आए, वचन अपना फिर से निभाना पड़ेगा।

***

तुम्हीं शारदा हो, तुम्हीं वत्सला हो, तुम्हीं चंडिका हो, तुम्हीं चंचला हो,
सुखों का खजाना है दर्शन तुम्हारा, सुखी सब का जीवन बनाना पड़ेगा।

***

हिमालय से ऊँची है महिमा तुम्हारी, समंदर से गहरी है करुणा तुम्हारी,
खड़ा तेरे दर पर, परेशान निर्मल, चरण की शरण में बिठाना पड़ेगा।

***

95. बीती आधी रात भजन में (7.6.81)

बीती आधी रात भजन में तू न अभी तक आई,
क्या दोष हुआ, कौन खता, मुझ से हुई माई।

***

जब जब तेरे द्वारे आया, तब तब शुभ आशीष मिला,
तन मन का दुख दूर किया मां, तूने दया दिखाई।

***

थके पाँव तन मन घबराया, तेरे भवन में पहुँच न पाया,
इसीलिए तो आज विवश हो, घर में ज्योत जगाई।

***

माँ इतनी करुणा दिखलाओ, भवन छोड़ इस घर में आओ।
देखो दुनियां में मेरी, हो न कहीं रुसवाई।

***

सुनकर करुण पुकार, भवन में, होकर सिंह सवार गगन में।
भैरव, बजरंगी के संग में, आधी रात माँ आई।

***

जय जगदंबा, गिरिवर वाली, भक्तों के दुख हरने वाली,
तुम ही करती हो निश दिन, निर्मल जन की रखवाली।

***

96. भवानी स्तुति (23.11.69)

जय जय चामुंडा, जग तारिणि।
शैल विहारिणि, जय सुख कारिणी।।

***

श्याम वरण, अति दिव्य स्वरूपा।
विधि हरि, हरि सम आदि अनूपा,
मुंड माल श्रृंगार, सुशोभित,
चंड मुंड से दैत्य विदारिनि!

***

जल, थल, अंबर नाद प्रकपित,
देव मुदित मन, खल दल शंकित।
निर्मल ज्योति जगा दो मन में,
पुण्य प्रकाशिनी, दुष्ट पछारिणी।

***

97. तेरे द्वारे अंबे मैया (13.5.85)

तेरे द्वारे अंबे मैया, खूब मन को चैन आता है।
हम युगों से लाल तेरे, तू युगों से अपनी माता है।

***

जब जब जग ने माँ को पुकारा, तब तब माँ ने दिया सहारा,
घोर निशाचर मार के माँ ने, जग का उजड़ा रूप सँवारा।
माँ तेरी करुणा का आँचल, नित सभी पर लहलहाता है।

***

कंचन सा उजला तन प्यारा, जो कण कण को दे उजियारा,
नीले नभ-सा आँचल तेरा, मन तेरा गंगा की धारा
बादल जैसा नेह सभी पर, नित्य नूतन रंग लाता है।

***

दुष्टों ने फिर जाल बिछाया, भक्तों पर संकट गहराया,
रखवाली इस बार न की तो, छिन जाएगी निर्मल छाया।
तू चाहे तो, जग यह जाने, पापी खुद मिट जाता है।

***

98. मेरे जीवन की राहों को (27.6.79)

मेरे जीवन की राहों को, ज़रा आसान करो माँ,
तुम्हारा भक्त हूँ, मुझ पर यही एहसान करो माँ
मैं कितना भटका हूँ माँ, तेरे दर के लिए।
मेरे मन की व्यथा हर लो, मेरा कल्याण करो माँ, तुम्हारा भक्त हूँ...

***

पाप जब जब बढ़े धर्म धूमिल हुआ, देव गिरने लगे, पुण्य पंकिल हुआ,
तूने अवतार तब तब लिया अंबिके! तेरी करुणां से संसार निर्मल हुआ।
धर्म का आज फिर से पतन हो रहा, दानवों के लिये युग चमन हो रहा,
पधारो फिर आज मैया, समर के लिए। तुम्हारा भक्त हूँ ...

***

मेरी मैया पिशाचों ने घेरा मुझे, अब तो आधार मिल जाए तेरा मुझे,
कितनी दूभर हुई है मेरी जिंदगी, अपनी छाया में दे दो बसेरा मुझे।
किसके द्वारे पे जाऊँ तुम्हें छोड़कर, अब न बैठो हे माँ मुझसे मुँह मोड़कर।
कि अपने संकट कटें उम्र भर के लिए। तुम्हारा भक्त ...

***

अब न दोगी अगर माँ सहारा मुझे लोग समझेंगे किस्मत का मारा मुझे,
मेरा विश्वास डगमग न हो जाए माँ, फिर से लौटा दो सौभाग्य प्यारा मुझे।
तेरी करुणा में मुझको फखर हो ऐ माँ, तेरे दर्शन का निर्मल असर हो ऐ माँ
मेरा तन दीपक बने हर डगर के लिए। तुम्हारा भक्त ...

***

श्री राम

99. राजा दशरथ के अंगनवा आए ललना (1985)

राजा दशरथ के अंगनवा, आए ललना,
आए ललना, रंग छाए ललना।

***

राम, लखन, और भरत, शत्रुघन, सुंदर नाम धराए,
बड़भागी महाराज कि जिनके घर परमेश्वर आए,
खुल गए जननी के करमवा। आए ललना।

***

ढोल, मृदंग, मंजीरा बाजे और बाजे शहनाई,
अवधपुरी की गली गली में नई उमंगें छाई।
खनके पायल और कंगनवा। आए ललना।

***

हंसा चढ़कर ब्रह्मा आए, बैल चढ़े बंभोले,
बीन बजाते नारद आए, कब जननी पट खोले,
झुक गया महलों पे गगनवा। आए ललना।

***

एक दिन ऐसा होय कि चारों सुत राजा बन जाएं,
राजा दशरथ देख देखकर मन ही मन हर्षाएं।
निर्मल आए वो लगनवा। आए ललना।

***

100. खेलो कूदो मौज उड़ाओ (1985)

खेलो कूदो मौज उड़ाओ, बचपन है मस्ताना, भूल न जाना

***

देखो प्यारे यह पाला है, इसको छूकर आना,
छैल कबड्डी कहते कहते, हमको हाथ लगाना।
हम पकड़ें तो बाँह छुड़ाकर झटपट वापस जाना। भूल न जाना।

***

छोटे से मंडल में आओ प्यारे आओ,
मच्छी मच्छी कित्ता पानी हम से पूछे जाओ।
डूब गए तो हम पकड़ेंगे, भाग कहीं तुम जाना, भूल न जाना।

***

रामू / लच्छू भैया चोर बनो तुम हम जाकर छुप जाएं,
हमें नहीं छू सके तो तुमसे आज जलेबी खाएं,
पहले खेलें, पीछे खाएँ, फिर तुम गीत सुनाना। भूल न जाना।

***

101. चल, चल, चल रंग रेलों में (1985)

चल, चल, चल रंग रेलों में,
आओ रम जाएं, रंग भरे रेलों में!
दूर करें चिताएँ सारी, झूला झूलें बारी बारी
फर फर फर उड़ जाएँ, बादल में छुप जाएँ,
सुख बरसे तरुवर, बेलों में ...

***

ओ जीवन भर रोने वालो, खेलो कूदो, हँस लो, गा लो,
हम हँस हँस कर जीते, सुख देते दुख पीते,
हमें रहना नहीं जग के झमेलों में।

***

यह बचपन अनमोल कहानी, ज्यों गंगा का शीतल पानी।
यह निर्मल फुलवारी, प्यार भरी किलकारी।
गूँजे नित नित दुनियाँ के मेलों में।

***

102. जुदा राम मन से किया नहीं जाए (13.4.85)

जुदा राम मन से किया नहीं जाए,
किया जाए तो फिर जिया नहीं जाए।

***

बिना सोचे, समझे बचन दे दिया,
कि बंधन में खुद तन बदन दे दिया,
अब तो व्याकुल मन रह, रहकर पछताए, हाय रे,
है कौन यहां जो मेरे प्राण बचाए, हाय रे।
वचन देके वापस लिया नहीं जाए,
लिया जाए तो फिर जिया नहीं जाए।

***

मेरी शान लेले, मेरे प्राण ले, मगर मुझसे तू मत मेरा राम ले।
तिरिया चरित्र पहचान न कोई पाए, हाय रे।
यह वो नागिन है जो सुत को खा जाए, हाय रे।
अभागिन को निर्मल किया नहीं जाए,
किया जाए तो फिर जिया नहीं जाए।

***

103. विदाई गीत (12.3.85)

धीरे धीरे रथ में बहना मोरी पग धरो री,
ऐ जी कोई, तज बाबुल का द्वार,
साजन आए, बहना मोरी, अंगना री।

***

रुण झुण रथवा, बहना मोरी, चल दियो री,
ऐ जी कोई, सखियन भई हैं उदास,
अब के बिछुरे जाने, बहना, कब मिलें री

***

नयन भिगोए, बहना, तोरे बाबुला री
ऐ जी कोई मैया भई है अधीर,
पिया घर चाली बहना मोरी लाडली री।

***

प्रियतम नैया, बहना मोरी, काठ की, री,
ऐ जी कोई, सास ससुर, पतवार,
भवसागर से बहना मोरी, तरन को री,

***

सबकी सेवा, बहना मोरी, तुम करो री,
ऐ जी कोई, महक उठे संसार,
स्वर्ग बसाओ, बहना मोरी, सासुरे री।

***

तन मन निर्मल बहना मोरी राखियो री,
ऐ जी कोई, सुख देंगे कर्तार,
अब के सावन, बहना मोरी, फिर मिलें री।

***

104. अंगना में धूम मचाय गयो, वो दिन आय गयो (1985) (रसिया)

अंगना में धूम मचाय गयो, वो दिन आय गयो
अवधपुरी की शोभा लखकर इन्द्र लोक शरमाय गयो...

***

सजे गलियाँ बाज़ार, बाल, वृद्ध, नर-नार, ऊँचे ऊँचे घर-द्वार
जैसे चंदा की चमक!
डाले कांधे पे दुकूल, बाँधे गजरा में फूल, रही झूलना में झूल
जैसे दामिनी-दमक।
राजतिलक की धूम मची है ज्यों बसंत गदराय गयो...

***

जगी मणिदीप माल, बाजें नुपूर रसाल, गूँजे मीठे सुरताल,
मची गलियों में धूम।

किए सोलह सिंगार, संग सोहै भरतार, मिले बहियाँ पसार,
रंग राचे झूम झूम।
मानो मनमाने रस पीकर, धन-जोबन इतराय गयो ...

***

महलों की छवि-न्यारी, मन मोहे फुलवारी, सजे अँगना-अटारी,
प्यारी तन की महक,
उठा तन मन में ज्वार, शुभ घड़ियाँ निहार, कैसे करें इंतजार
पल लागे ना पलक,
ऐसे में, निर्मल, रसभीना, रसिया चित्त चुराय गयो ...

***

105. तुम्हारे एहसान भूल जाए (1985)

तुम्हारे ऐहसान भूल जाए, ये राम इतना गिरा नहीं है,
दुखी हो माँ बाप जिसके कारण, वो आदमी कुछ खरा नहीं है।

***

जनम जनम का अटूट बँधन, तुम्हारा जीवन, हमारा जीवन,
जो एक झटके से टूट जाए, वो तार का सिलसिला नहीं है।

***

तुम्हीं तपस्या, तुम्हीं हो साधन, तुम्हीं हो पूजन, तुम्हीं हो वंदन,
कि तुमसे बढ़कर धरा पे कोई, उदार दिल देवता नहीं है।

***

तुम्हारी इच्छा से जन्म पाया, विकास निर्मल तुम्हारी माया,
तुम्हारी आज्ञा से प्राण जाएं, तो जन्म अपना बुरा नहीं है।

***

106. ओ, अवध के प्राण रघुवर (1985)

ओ, अवध के प्राण रघुवर ना जा रे ना जा, रोको कोई।

***

याद कर बीता जमाना दिल मेरा घबरा रहा,
मौत बनकर शाप द्विज का सामने मँडरा रहा,
मैं पड़ा निष्प्राण घायल, ना जा रे ...

***

राम, तू मेरा सहारा, तुझ से ही संसार है,
जा रहा है तू जो वन में, ज़िंदगी बेकार है।
हर तरफ है विकट दलदल, ना जा रे ...

***

आज है सूनी अयोध्या घर, डगर वीरान है,
हार बैठा प्राण अपने, ये भी कोई शान है।
आज लगती मौत निर्मल, ना जा रे ...

***

107. तरसे जिया दिन रात रे (1985)

तरसे जिया दिन रात रे
वो दिन, वह मुस्काता जीवन, सपनों की सी बात रे?

***

मन में घोर अँधेरा छाया,
विरहा का बादल घिर आया,
नैनन में बरसात रे ...

***

पंख कहाँ उड़के आ जाऊँ,
राम तुम्हारे दर्शन पाऊँ।
अबला की क्या जात रे...

***

व्याकुल हिरनी, हिरना छूटा,
दिल टूटा पर साँस न टूटा,
निर्मल मन अकुलात रे ...

***

108. सौ बार जन्म लेकर भी कठिन है (1985)

सौ बार जन्म लेकर भी कठिन है भार चुकाना लक्ष्मण का,
पलकों में सँजोकर रख लेंगे हम, यह नजराना लक्ष्मण का।

***

भाई के लिए वन में आना, पल भर भी न वन में सुख पाना,
सूरज की तरह हँसते हँसते, जग से छुप जाना लक्ष्मण का।

***

कर्त्तव्य निभाना मुस्काना, संकट में कभी ना घबराना,
दीपक की तरह जलते जलते, नित राह दिखाना लक्ष्मण का।

***

खिलते रहना फूलों की तरह, पिलते रहना शूलों की तरह,
रह रह के मुझे तड़पाता है निर्मल अफसाना लक्ष्मण का।

***

109. विश्वास करो हे मात पिता (5.5.84)

विश्वास करो हे मात-पिता, हम भी हैं उन्हीं संतानों में,
बसते रहते माँ-बाप सदा, जिनके तन, मन और प्राणों में।

***

जीते हैं सदा एक आस लिए मरते भी हैं तो एक हसरत हैं,
लग जाए कहीं कुछ ठेस नहीं, इनके दिल के अरमानो में।

***

एहसान किए हम पर इतने, सौ जन्म उतार न पाएँगे,
सौ बार जलें शमा की तरह, सौ बार रहें परवानों में।

***

अरमान यही हर बार मिले, इन निर्मल चरणों की छाया,
परवाह नहीं मर जाने की, होगी न कमीं बलिदानों में।

***

110. न चित् में धरो नाथ (15.1.68)

न चित् में धरो नाथ अवगुण हमारे,
भले या बुरे हैं तुम्हारे तुम्हारे।

* * *

अजब वासनाओं का चक्कर चलाया, तुम्हें भूलकर जग उसी में समाया,
कि जिसने बनाया, उसी के विसारे...

* * *

तुम्हीं एक माता, तुम्हीं एक पिता हो, तुम्हीं एक बंधु तुम्हीं एक सखा हो,
तुम्हीं हर घड़ी हो सहायक हमारे...

* * *

हमें भी तनिक सी झलक तुम दिखा दो, भँवर में है नैया किनारे लगा दो,
निराधार निर्मल तुम्हीं को पुकारे।

* * *

111. हे नाथ! तुम्हारे चरणों में (16.1.70)

हे नाथ! तुम्हारे चरणों में, श्रद्धा के फूल चढ़ाएँ हम।
तुम क्या हो कितने पावन हो, सारे जग को बतलाएं हम।

* * *

सर्दी, गर्मी, बरसात सभी तुम नंगे तन पर सहते हो,
इस रंग बदलती दुनियाँ में तुम एक रंग में रहते हो।
निर्लिप्त कमल की आँखों में, मोती बन कर बस जाएं हम।

* * *

घर बार नहीं, संसार नहीं, एक पैसे का व्यापार नहीं,
फिर भी जंगल में मंगल है क्या यह विचित्र उपहार नहीं।
इस शैल खंड के शंकर को, अपना सर्वस्व चढ़ाएँ हम।

* * *

वह कृष्ण कुंड यह शिव सागर, वह अमर ज्योति यह गौशाला।
निर्लिप्त तपस्वी को पाकर यह धन्य हुई पर्वत माला।
मानवता के मतवाले को मानव बन कर दिखलाएं है हम।

* * *

हे भैरव, निर्भय, निष्कलंक, निर्द्वंद्व, निरामय, निर्विकार
चादर से निर्मल तन ढाँपे बैठे हो कब से निराहार।
इन पावन चरणों की खातिर, पथ के पाहन बन जाएं हम।

* * *

112. संतो का भेद अपार (20.5.85)

संतों का भेद अपार सत्संग करे सो पहचाने,

* * *

ये वाणी के मीठे सागर, अमृत फल के ऊँचे तरुवर
गंगा की पावन धार...

* * *

नित रहते हैं जग से न्यारे, लेकिन अग जग के रखवारे,
करते सब का उद्धार।

* * *

संताप सहें सुख सरसाएँ, भक्तों पर करुणा बरसाएँ
नित करते पर उपकार।

* * *

निर्मल पथ दिखलाने वाले, बिन तन भी भक्तों को पाले,
जग नैया की पतवार।

* * *

113. शिव शंकर स्तुति (16.9.69)

जय शिव शंकर, जय त्रिपुरारी,
जय जय भक्त जनन भयहारी।

* * *

जय गंगाधर, जय डमरूधर,
जय पन्नग-धर, जय अविकारी।

* * *

जय जग कर्ता, जय जग भर्ता,
जय जगहर्ता, प्रलयंकारी।

* * *

जय सर्वेश्वर, जयतु महेश्वर,
जय परमेश्वर, जय तप धारी।

* * *

जय अविचल, जय पावन निर्मल
जय निश्चल, अक्षय भंडारी।

* * *

114. छोड़ उदासी (29.09.76)

छोड़ उदासी, दीवाने,
शिव शंकर भोले भंडारी, सब संताप मिटाएंगे, बेड़ा पार लगाएंगे
तू क्यों नयन भिगोता है, क्यों चिताएं ढोता है
शिव के द्वारे, शीष झुकारे, सब संकट कट जाएंगे।

* * *

जिनके सुत गजवदन विनायक, कृपा-सिंधु, सुंदर, सब लायक,
जंगल में मंगल हो जाए, जब गणपति हर्षाए,
जब गणेश के आराधन से ऋद्धि सिद्धि मिल जाए।
हो प्रसन्न यदि शिव शंकर तो कौन कमीं रह जाए। छोड़ उदासी ...

* * *

शिव शंकर के संग भवानी, जिनकी महिमां जग ने जानी,
सिंह वाहिनी जब जब आए, दानव दल खप जाए।
मां की ममता की दुनियां में है बेजोड़ कहानी,
जीवन को जगमग कर देंगे, शंभु, गणेश, भवानी। छोड़ उदासी...

* * *

गंगाधर, शशिधर, त्रिपुरारी, शिव की महिमा जग से न्यारी,
तीनों लोकों के रखवाले, खुद बाघंबरधारी, त्रिपुरारी,
ज्यों रवि के निर्मल प्रकाश से अँधियारा हट जाए,
ऐसे ही शिव के प्रताप से, रोग शोक, मिट जाएं। छोड़ उदासी ...

* * *

115. खाइ के एक भंग का गोला (27.6.79)

खाइ के एक भंग का गोला, जाय रहे बैल चढ़े बंभोला
सिर पे गंगा, गले में व्याल, संग में भूत, प्रेत बेताल,
डमरू डिमक् डिमक् डिम बोला।
शंकर कैलाशी, जब गौरां को व्याहने आए,
गौरां बेचारी, बड़े चक्कर में फँस गई हाय,
कैसा काला काला, यह जोगी खप्पर वाला,
दुनियां का रखवाला, कैसा रूप निराला,
कैसे डालूं गले, जय माल-डमरू

* * *

मैना महतारी, इसे देख देख पछताए,
क्या औघड़ जोगी, मेरी बेटी को व्याहने आए,
तन काला, मन काला, अंग अंग में ज्वाला,
यह चंदा सी बाला, वह बुढ़ा मटियाला।
कैसा डाला, गले जंजाल ... डमरू

* * *

गौरां शर्माई, शिव देख देख मुस्काए,
पलक झपकते, शिव राजकुँवर बन आए,
कैसा प्यारा प्यारा, चंदा सा उजियारा,
सबने रूप निहारा, गौरां ने दिल वारा,
हुए निर्मल नयन निहाल ... डमरू

* * *

116. श्री हनुमान - स्तुति (2.3.97)

जय पवन-पुत्र बल धाम
जिन पर कृपा तुम्हारी उन पर कृपा करें श्री राम!

* * *

रवि से अधिक प्रताप तुम्हारा कंचन तन अभिराम,
अति विशाल, अति सूक्ष्म रूप धर, आए प्रभु के काम। जय...

* * *

पर उपकार, राम-पद-पूजा, दुष्ट-दलन, शुभ काम,
साखी हैं सुग्रीव, विभीषण, लखन और सिया राम। जय...

* * *

सिद्ध कर दिया तुमने, प्रभु से बड़ा प्रभु का नाम।
निर्भय चले गगन, जल, थल पर लेके प्रभु का नाम। जय...

* * *

रोग, शोक, संकट, बाधाएं, हरे तुम्हारा नाम,
गुण-सागर, बल-बुद्धि-उजागर, बारंबार प्रणाम। जय...

* * *

नहीं असंभव कुछ भी तुमको कपिवर, कृपा-निधान।
निष्कलंक, निर्भय, निर्मल हो जीवन हे हनुमान। जय...

* * *

117. श्यामा - श्याम कीर्तन (5.5.2005)

जपो मन मेरे, राधे, राधे
कन्हैया फिरेंगे, आगे, आगे।

* * *

गगन के बदरवा, श्याम सलौने।
बदरवा में बरखा, राधे राधे।

* * *

सुधा रस-प्याला, श्याम का मुखड़ा,
अधर-रस मुरली राधे, राधे।

* * *

किनारे नदिया के श्याम की बाहें,
लहर नदिया की राधे, राधे।

* * *

कन्हैया का संबल राधा रानी
बिना श्री राधा/ सीता / जगदंबा, मोहन / रघुवर / शंकर आधे।

* * *

युगल छवि निर्मल प्रेम की डोरी,
कोई इसे बाँधे, तो प्रेम से बाँधे।

* * *

118. बिहारी संग राधा प्यारी लगे (15.8.2008)

प्यारी लगे, मतवारी लगे, हँसती हुई सी फुलवारी लगे।

* * *

नीले कमल जैसे बाँके बिहारी,
किशोरी राधा केशर-क्यारी लगे
कारे बदरवा बाँके बिहारी,
बिजुरिया बरसाने वारी लगे।

* * *

बाँके बिहारी मानो पूनम के चंदा,
चँदनियां भानु-दुलारी लगे।

* * *

राधा-बिहारी को झूला झुलाएं,
झूला झुलाएं उन्हें माखन खिलाएँ,
माखन खिलाएँ उन्हें छम छम नचाएं
छम छम नचाएँ उन्हें मन में बसाएँ
रंगीली दुनिया सारी लगे।
निर्मल निगाहों से उनको निहारें,
युगल छवि दुनिया से न्यारी लगे।

* * *

119. भगवान पियारे आजा (20.7.61)

भगवान पियारे आजा, भगतों के सहारे आजा,
अँधियारा है जहाँ, सूना-2 आसमाँ
भगवान पियारे आजा
श्याम तेरे बिना भारती रो रही, रो रही,
आज भगतों की किस्मत कहाँ सो रही।
सारा पापी है जहाँ अब जाएँ हम कहाँ,
बस इतना हमें समझा जा।
सैंकड़ों आज गऊएँ यहाँ कट रहीं कट रही,
आज पापों से भारत मही अट रही, अट रही
एक छोटी सी झलक, मन भावनी मुरत,
घनश्याम हमें दिखलाजा।
नौजवाँ देश को भूलते जा रहे, जा रहे,
आज इंग्लैंड के गीत वो गा रहे, गा रहे।
अँधियारा है यहाँ, उजियारा है कहाँ,
वह निर्मल राह दिखा जा।

***

120. काहे बाजे बैरन बाँसुरिया (15.7.61)

काहे बाजे बैरन बाँसुरिया, श्याम सलौने साँवरिया।
जैसे अधरों से तेरे मुरलिया लगी, मेरे प्यासे हृदय में हिलौरें जगी
मेरा नाँचे है मन, चूमें धरती गगन, सर बोझ बनी मेरी गागरिया।

***

तेरी मुरली कन्हैया, है जादू भरी, छीन मुझ से ही मेरा जिया ले गई,
ना इधर जा सकूँ, ना उधर जा सकूँ, कान्हा आज हुई रे मैं तो बावरिया।
चाँद तारों की छैय्याँ में आऊँगी मैं, तेरी निर्मल मुरलिया चुराऊँगी मैं,
जब लगाओगे तुम, राधा, राधा की धुन, मेरे संग रहेगी तेरी बासुँरिया।

***

121. साँवरा सलौना घनश्याम (26.3.68)

जब जब संकट छाए, ये मन घबराए, पल पल बिगड़ी बनाए,
साँवरा सलौना घनश्याम।
मैं निर्धन, तो वो धनवान, मैं निर्बल तो वो बलवान, मैं हूँ जो पुजारी
तो वो है भगवान।
संग संग प्रीत निभाए, कभी ना तरसाए, पल पल बिगड़ी बनाए .....
काँटों से भरा है संसार, एक खुशी तो गम हैं हजार, नाव है पुरानी
फँसी है मझधार
जगमग ज्योति जगाए, भँवर से बचाए, पल पल बिगड़ी बनाए.....
एक है वो, अनेक हैं नाम, कण कण में बसा है घनश्याम, पंथ है
हज़ारों वही है एक ठाँव,
मन निर्मल बन जाए, तभी वह आए, पल पल बिगड़ी बनाए.....

***

122. मीठी बंसी बजा के साँवरिया (25.9.64)

मीठी बंसी बजा के साँवरिया, तुम ना जाने कहाँ खो गए।
छान ली हमने सारी डगरिया, दूर नजरों से क्यों हो गए।

***

मैंने पापी पपीहे से पूछा, तू बता दे साँवारिया कहाँ है,
उड़ गया वो भी नीले गगन में, बोलता पी कहाँ - पी कहाँ है।
छेड़ती हमको सारी नगरिया, देख हम क्या से क्या हो गए।

***

मोरनी बन के नाँचूं मैं वन में, साँवरे श्यामघन बन के आओ,
मैं कली बन के झूमूँ पवन में, तुम भँवर बनके कुछ गुनगुनाओ।
तेरी जादू भरी रे बाँसुरिया, जगते जगते ही हम सो गए।

***

तेरे दर्शन की, राधा दीवानी, प्यास लेकर चली आ रही है,
मन के मंदिर में कब से न जाने, तेरी निर्मल छटा छा रही है।
रंग ली श्याम रंग में चुनरिया, रंग सारे हवा हो गए।

***

123. मुरली सुना के न हमको सताओ (15.1.61)

मुरली सुना के न हमको सताओ,
कहाँ हो कहाँ हो कन्हैया बताओ।

***

तुम्हें ढूँढते ढूंढते थक गए हम, न मंदिर में हो तुम न कुंजों में हो तुम।
निठुर ना बनो कुछ दया तो दिखाओ, कहाँ हो कहाँ हो।।

***

मेरी टेर का कुछ असर हो रहा है, मेरा मन तुम्हारा ही घर हो रहा है।
यहीं प्रेम की ज्योति निर्मल जगाओ, यहाँ हो, वहाँ हो, कहाँ हो बताओ।

***

124. तेरे पास कैसे आऊँ ओ साँवरे बता दे (20.9.69)

तेरे पास कैसे आऊँ ओ साँवरे बता दे,
मझधार में फँसा हूँ, तू ही रास्ता दिखा दे।
घेरे खड़ी हैं मुझको रंगीन वासनाएँ,
मन का नहीं भरोसा, पग पग पे जो दगा दे।
मुझमें कहाँ वो बल है जो तुझे यहाँ बुला लूं,
निर्बल को दे सहारा, भव पार तू लगा दे।
लाखों उबर गए हैं तेरे नाम के सहारे,
ओ हजार हाथों वाले! मुझ को भी आसरा दे।
कैसे सुनाऊँ तुझको, निर्मल करुण कहानी ?
शायद ये चार आँसू सब दास्ताँ सुना दें।

***

125. कान्हा दरस दिखा दे (16.12.68)

कान्हा दरस दिखादे म्हारो मन भटकै।
दान दही को मांगतो, करतो माखन की चोरी,
पाणी भरतां फोड़ तो म्हारी गागर कोरी कोरी
गौरी गाँव की दीवानी हुई रट रट कै।
तेरा बिना कन्हैया लागै, जमना रूखी रूखी
पनघट सूनो, गलियां सूनी, गाय-बाछड़ी भूखी,
सूखी बेलड़ी की नाईं म्हारो जीव लटकै।
काल ही ऊधो जी म्हानै जोग सिखायो चोखो,
निराकार से प्रीत लगाल्यो, मन को मारग रोको,
फोको ज्ञान म्हारा हीबड़ा में कैयां अटकै।
कुंजगल्यां नै भूल गयो तू देस बिराणे जाके,
म्हारी निर्मल प्रीत पुराणी, चल्यो गया बिसराके,
आके खोल दे कन्हैया म्हारे पट घट के।

***

126. मटकी को तोड़ फोड़ के (1.12.68)

मटकी को तोड़ फोड़ के माखन लियो निकाल,
गोकुल के चोर आज तूने कर दिया कमाल।
जाने किधर से आ गया, संग लेके ग्वाल बाल,
गोकुल के चोर ...
कितने जतन से नेक सा माखन था बचाया,
खाया न कभी और न धन हमने कमाया
सब की नजर से हमने सदा इसको बचाया,
पल भर में ग्वाल-बालो को सब तूने लुटाया।
ग्वालिन के घर को लूट के, ग्वाले किए निहाल।
गोकुल के चोर ...
ग्वालों के संग तूने अजब खेल रचाया,
घोड़ी बना के पीठ पे दूजे को चढ़ाया।

इस पर भी तेरे हाथ जो छींका नहीं आया,
लाठी से तोड़ फोड़ के धरती पै गिराया।
बदला हज़ार जन्म का हम से लिया निकाल।
गोकुल के चोर ...
सुनते हैं नंद गोप के गउएँ हजार हैं,
आंगन में सदा बह रही गोरस की धार है,
माखन के संग में वहाँ माँ का दुलार है,
फिर भी न जाने क्यों, तुझे चोरी से प्यार है।
नटखट है बड़े जोर का, चित चोर नंद लाल।
गोकुल के चोर ...
गोकुल की हर गली में चमन तेरे लिए है,
हर तन में सदन, मन में लगन तेरे लिए है,
निर्मल हृदय में प्रेम अगन तेरे लिए है
तेरी धरा है, और गगन तेरे लिए है
मुरली बजाके ले गयो तन से जिगर निकाल।
गोकुल के चोर ...

***

127. जाने मन मोहन मंदिर में (16.12.68)

जाने मन मोहन मंदिर में, किस भाँति गुजारा करते हैं।
उनके दीवाने तो उनको, हर रोज पुकारा करते हैं।
गोकुल भी वही, जमुना भी वही, युग बीत गए मुरली ना सुनी।
हम तो अब भी उन राहों को, पलकों से बुहारा करते हैं।
बोलो, दिल पर क्या ठेस लगी, पत्थर के प्रीतम बन बैठे,
लो, रास रचैया भी अब तो, भक्तों से किनारा करते हैं।
तुम रह न सकोगे भक्तों बिन, खामोश निगाहें कहती हैं,
भक्तों का गिला, दुनियाँ की हवा, सब हमको इशारा करते हैं।
मंदिर में ही गर रहना है, यह दिल भी तो एक मंदिर है।
देखें तो कन्हैया अब कैसे, इन्कार दुबारा करते हैं।
पत्थर भी पिघल ही जाता है, दिल के निर्मल अरमानों से,
हर रोज तभी तो फूलों से, श्रृंगार तुम्हारा करते हैं।

***

128. प्यारे श्याम बसे राधा के मन में (12.7.70)

प्यारे श्याम बसे राधा के मन में, राधा बसी मुरली में,
मुरली है सबके जिगर में कोई जाने ना।

***

जमना के तीर देखो छाया मधुमास है,
कान्हा संग रास रचाएं हर दिल में प्यास है,
मस्ती है जमना जल में कोई जाने ना।

***

लहरों के संग नाँचे, मतवाली यामिनी,
चंदा के संग झूमें पूनम की चाँदनी,
थिरकन है हर पायल में, कोई जाने ना,

***

गोपी गोपी के संग में निर्मल गोपाल है,
जैसे जीवन के पीछे, कर्मों का जाल है।
युग बीता जैसे पल में, कोई जाने ना।

***

129. जमना के किनारे (16.7.70)

जमना के किनारे ... क्या बात हो गई,
उसने मुरली बजाई, दुनियाँ साथ हो गई।

***

मधुर मधुर मुरली रस घोले, ... धरती अंबर डोलें,
एक ज्वार उठा जमना जल में, अग जग खोया इस हलचल में,
छुप गए चाँद सितारे ... क्या बात हो गई।
काले बादल घिर आए, बरसात हो गई।
रुक रुक चले पवन मतवाली, जले कोयलिया काली,
कैसा जादू भरा है बाँसुरिया में, गऊँए रुक गई बीच डगरिया में,
तन मन सबने वारे ... क्या बात हो गई,
हो गई दुनियाँ दीवानी कैसी घात हो गई।

***

तज तज चलीं सदन अनजानी, बाजे पायल मस्तानी,
राधा राधा पुकारा बाँसुरिया ने, छोड़ा झट पट गेह गुजरिया ने,
पहुँची नदी किनारे ... क्या बात हो गई, फिर तो बरसों से
लंबी निर्मल रात हो गई।

***

130. आजा तुझको पुकारे ब्रजधाम रे (23.4.72)

आजा तुझको पुकारे ब्रजधाम रे, मनमोहन, घनश्याम रे।

***

अब कहाँ बाजे तेरी प्यारी बाँसुरिया,
माखन को तरसे तेरी गोकुल नगरिया
प्रीत बिना घर आँगन सूने, नेह बिना इंसान रे आजा.....
बैठे हजारों तेरी जमना किनारे,
नयन झुकाए बाहें पसारे,
झोपड़ियों में जीवन तरसे, मंदिर में भगवान रे आजा.....

***

छिछला सिंगार करें तन के पुजारी,
तितली बनी है आज भारत की नारी,
कली - भँवर की रंग-रंलियों में, प्रीत हुई बदनाम रे आजा.....

***

तुझको पुकारें तेरी गऊएं बेचारी
आँखों में आँसू, सर पे कटारी,
निर्मल हंस भटकते फिरते, काग बने दीवान रे आजा.....

***

131. कुछ प्रेम के आँसू हैं (22.1.73)

कुछ प्रेम के आँसू हैं, कुछ यादें पुरानी हैं
ये लगन और कुछ भी नहीं, विरहन की कहानी है।

***

है याद हमें वो दिन, जब रास रचाया था,
जमना पै जवानी थी, मधुवन मुस्काया था।

***

अब तो तरसे हर दिल, हर आँख में पानी है। ये लगन ...
सुनसान डगरिया है, पनघट पै उदासी है,
मधुवन मुरझाया है, खुद जमना प्यासी है,
हे श्याम! तुम्हारे बिन हर चीज़ बेगानी है। ये लगन ...

***

तू देख जरा आकर, ब्रज का क्या हाल हुआ,
तेरे मतवालों का, जीवन जंजाल हुआ।
अब तो निर्मल मन में तेरी याद बसानी है। ये लगन ...

***

132. भक्त मेरे हैं मैं भक्त का हूँ सदा (27.10.78)

भक्त मेरे हैं मैं भक्त का हूँ सदा, भक्त के हर वचन को निभाता हूँ मैं,
प्रेम के कच्चे धागों से बाँधा हुआ, नाम लेते ही रक्षा को आता हूँ मैं।

***

गर्म लोहे के खंभे से प्रह्लाद को, कस दिया दुष्ट ने मारने के लिए,
खंभ को फाड़ डाला बचाया उसे, इस तरह भक्त का दुख मिटाता हूँ मैं।

***

द्रौपदी की व्यथा याद होगी तुम्हें, लुट रही थी खड़ी बीच दरबार में,
चीर खिंचता गया अंत आया नहीं, लाज भक्तों की ऐसे बचाता हूँ मैं।

***

बन के चेता कभी जूतियाँ गाँठता, बनके नंदा सुयोधन के पग चाँपता।
कोई निर्मल हृदय से खिलाए मुझे, बेर झूठे भिलनियाँ के खाता हूँ मैं।

***

133. आजा कन्हैया एक बार (4.6.85)

आजा कन्हैया एक बार, आजा, ब्रज है दीवाना, तेरी याद में,
दधि की मुटकिया ले, ढूँढे गुजरिया तुझे साँझ सकारे,
गउओं के संग संग ग्वाले पुकारें आजा जमना किनारे,
मुरली सुना दे रसदार,

* * *

रैन दिवस तेरी बाट निहारे मैया खोले किंवरिया,
राधा दीवानी बैठी अँखियां बिछाए अब तो आजा साँवरिया,
दरस दिखा दे एक बार।

* * *

आजा कि मेघा आए धरती ने ओढ़ी धानी धानी चुनरिया,
लाख बदरिया बरसे प्यास बुझे ना मेरी सारी उमरिया,
दिल को है तेरा इंतज़ार।

* * *

साँवरिया काहे सुधि-बिसराई परदेस में जाके,
चैन मिला क्या किसी निर्मल मन का चैन चुराके,
हम तो गए हैं दिल हार।

* * *

134. तेरी मुरलिया के मनहर गीत (15.10.59)

तेरी मुरलिया के मनहर गीत, प्यासे मन में जगाएं प्रीत।
ग्वालों की नस नस में छाया हुआ,
राधा के मन में समाया हुआ,
जग के झमेलों में कुछ भी नहीं,
तेरा नाम ही मन को भाया हुआ।
तू ही मालिक, तू ही मीत, प्यासे मन में जगाएं प्रीत।

हम को अगर भूल जाओगे तुम
तो सपनों में भी सुख न पाओगे तुम
अपनी लगन में जो तासीर है,
तो फिर फिरके भारत में आओगे तुम,
आखिर, हमारी होगी जीत, प्यासे मन में जगाएं प्रीत
मुरली की धुन पर बुलाते हुए,
छुपे जा रहे हो सताते हुए,
निर्मल हृदय की ये झंकार है,
तो आओ वही धुन बजाते हुए,
गूँजे गगन में मुरलिया के गीत, प्यासे मन में जगाएं प्रीत।

* * *

135. कर मुरली उर माल (5.7.58)

कर मुरली उर माल, शीष पै घूंघर वाले बाल ... तेरा क्या कहना,
रसिक नंद के लाल दिया है दिल पै जादू डाल .....
चुरा के हमारा मन, सुना के मधुर सी धुन, कन्हैया चले कहाँ,
तन भूल बैठे हम, मन भूल बैठे हम, खबर भी नहीं यहाँ
ओ यशुदा के लाल, नंद के प्यारे बाल गोपाल ... तेरा क्या कहना।
तरसते हैं कब से हम, सताओ न हम को तुम, मुरलिया को चूमके,
बहारों के आए दिन, चलें बादलों के संग, हवाओं में झूमके।
ऊँचा गगन विशाल, लगाए निर्मल धुन पर ताल ... तेरा क्या कहना।

* * *

136. खेलें सखा संग होली (4.3.64)

खेलें सखा संग होली, करें रंग भीनी ठठोली,
चंद्रसखी! तुम अधिक सयानी, रखियो छुपाकर डोली,
भानु सुता जब हरिहि बुलावै, उलट देओ रंग रोली,
करो मुख पे तीखी रंगोली।

* * *

सुनरी सखी, मुरली धुन आवत, छेड़ी साँवरिया ने होली,
बीच बीच ढप चंग बजत हैं, आई कन्हैया की टोली,
रही हम तो, भोली की भोली।

* * *

नटखट श्याम कहीं तो मानो, छोड़ो ना गैल हमारी,
रीत छोड़ अनरीत चलो ना, आप पुरुष हम नारी।
हटो, हठ छोड़ो मुरारी।

* * *

137. तुम्हें श्याम भारत में आना पड़ेगा (21.7.64)

तुम्हें श्याम भारत में आना पड़ेगा, जो वादा किया वो निभाना पड़ेगा।
रोती है गऊएं सारी, रोता जमाना तुमको आना पड़ेगा।
तुम्हीं ने कहा था, हम आते रहेंगे, सदा भक्तों के दुख मिटाते रहेंगे,
तुम्हीं देख लो, अब तुम्हें क्या बताना, तुमको आना पड़ेगा।
तुम्हारी ज़मी पर ये क्या हो रहा है, उछलता अधर्मी धरम रो रहा है,
भँवर में है नैया, भला फिर क्या आना, तुमको आना पड़ेगा।
दिखा दो कि भारत में आते रहे हो, सदा धर्म निर्मल बचाते रहे हो
वो गीता का निर्मल वचन ना भुलाना, तुम को आना पड़ेगा।

* * *

138. का सँग खेलूं मैं होरी (14.3.89)

सखि श्याम न आए का सँग खेलूं मैं होरी।
गोकुल छोड़ गए मन मोहन, मथुरा में भरमाए,
पथ हेरत पथरा गई अँखियां, अब लौं न लौट के आए।
तन गागर पलकें पिचकारी, छल छल रंग बरसाए,
भीजें कपोल व चुनरिया भीजे, तन की तपन न जाए,
दिन नाहिं चैन रैन नहिं निंदिया, बैरी बसंत न भाए,
आप न आवै, संदेसो न भेजे, धक् धक् धक् जिया जाए।
हम जागैं जग चैन से सोए, कोई न धीर बँधाए,
जाने कोई यदि पीर पराई, निर्मल श्याम मिलाए।

* * *

139. होरी आई बरसे नए रंग रे (28.2.99)

होरी आई बरसे नए रंग रे
झूमे सारी दुनियाँ बजे चंग रे।

* * *

वृदांवन में कान्हा नाचे, संग गोपियाँ ग्वाले,
धरती, अंबर, चंदा, सूरज, सभी हुए मतवाले।
नाचे शिव शंकर शिवा संग रे।

* * *

उड़त अबीर, गुलाल, गगन में, बरसे रंग सलौना,
स्वर्गपुरी से भी सुंदर, भारत का कोना कोना,
देखे जग सारा रहे दंग रे

* * *

लोभ ताल पर अग जग नाँचे, मोह रंग रस भीना,
माया की मुरली ने निर्मल चैन सभी का छीना,
काहे तू कन्हैया करे तंग रे .....

* * *

140. होरी खेलन पधारो (9.3.2003)

होरी खेलन पधारो घर आए रसिया,
घर आए रसिया, मन भाए रसिया।

* * *

उड़त गुलाल, लाल भयो अंबर, बहे रंग की धारा,
फागुण में वृंदावन लागे तीन लोक से न्यारा सखि तनिक निहारो।

* * *

ग्वाल, बाल के संग साँवरो बरसाने में आयो,
अलबेलो सिंगार सलौना (छबीला) नटवर रूप बनायो, वापे तन मन वारो।

* * *

फागुण में मन को ना भाए ऊँचे महल अटारी,
कुंजन में ढप ढोल बजाकर नाच रहे बनवारी, लागै रास रंग प्यारो

* * *

धन्य धन्य ब्रजधाम सलौना, वृदांवन की होरी
निर्मल प्रेम तरंग जगावै, राग, रंग बर जोरी,
श्यामा! श्यामै रंग डारो।

* * *

(उपर्युक्त भजन में प्रयोगार्य सवैये)

सवैया

(1) रंग गुलाल अबीर के बादर, अंबर में चहुँ ओर घिरे हैं,
फागुन में ब्रज मंडल के, घर आंगन रंग-उमंग भरे हैं।
देखो सखि सब ओर तरंगित, ताल तमाल, कदंब हरे हैं
ऐसो बसंत को रंग चढ्यो हरि रंग गुलाल के संग खड़े हैं।

* * *

(2) नटवर भेस धरे घनश्याम, छबीलो, रसीलो स्वरूप सँवारो।
बाँसुरी हाथ में, मोर पखा सिर, माथे पे चंदन कुंकुम सार्‌यो
देखत लाजत कोटिक काम, पयोधि सुधा को पीतांबर वारो
देखो सखी मनमोहन को मुख, प्रेम से श्याम पै तन मन वारो।

* * *

(3) फागुण में ढप, ढोल सुहावत, गायन, नृत्य लगै अति प्यारो,
रंग गुलाल उड़ावत खेलत, कुंजन में पटु बाँसुरी वारो।
ऊँची अटारी उदास लगै अति नीको लगै हुड़दंग, पँवारो,
रंग बिरंगे प्रसून निहारत, झूमत है मन-भृंग हमारो।

* * *

(4) धन्य सखी! ब्रजधाम सुहावनो, रंग भरी बरसाने की होरी,
प्रेम तरंग उमंग जगावत, लागै भलो फगवा, बरजोरी।
राधे! सुनो हमसों न बचै, पटुश्याम सखा की जमात निगौरी,
रंग उड़ाओ, लगाओ गुलाल, बनाओ कन्हैया को राधिका गौरी

* * *

141. म्हाने ब्रज को निवास प्यारो लागै (1.9.2004)

म्हाने ब्रज को निवास प्यारो लागै, दुलारो लागै साँवरिया।
अंगना में देखूं कान्हा ठाड़ो मुस्कावै,
वो तो रोज रोज माखन चुरावै, दुलारो ...

* * *

कुंजन में देखूं कान्हा ठाड़ो मुस्काए,
वो तो नित नई रास रचावै ... दुलारो।

* * *

जमना पें देखूं कान्हा ठाड़ो मुस्कावै,
वो तो मीठी मीठी बांसुरी बजावै ... दुलारो।

* * *

वन में निहारूँ कान्हा ठाड़ौ मुस्कावै
वो तो कारी-धोरी गैयां चरावै ... दुलारो।

* * *

मन में निहारूँ कान्हा ठाड़ौ मुस्कावै
वो तो तन मन को निर्मल बनावै ... दुलारो।

* * *

142. पग पग पै मथुरा वृदांवन होगा (9.4.01)

पग पग पै मथुरा वृदांवन होगा, राधा-कन्हैया का अर्चन होगा।
साँस साँस में जब नटवर का चिंतन होगा।
मन में तरंगे उठेंगी जब नाम की, अँखियों में छाएंगी सलौनी छवि श्याम की।
ढीला विकारों का बंधन होगा, राधा कन्हैया का अर्चन होगा।
तन की बगिया में खिलेंगे फूल प्यार के, सुख बरसाएंगे नजारे संसार के।
सब ओर हरियाला सावन होगा, राधा कन्हैया का अर्चन होगा।
जीवन बहेगा सदा निर्मल धार सा, हमें हर शूल भी लगेगा उपहार सा।
खुशियों भरा अपना आंगन होगा। राधा कन्हैया का अर्चन होगा।

***

143. कैसे तुम्हें रिझाऊँ (20.9.07)

कैसे तुम्हें रिझाऊँ बंसी बजाने वाले।
आया तुम्हारे द्वारे उलझन नई संभाले।

***

भक्तों के संग मोहन! तुम भी बदल गए हो,
सबको लगें सुहाने दिन रूप-रंग वाले।

***

शबरी के बेर तुमको अब क्यों मधुर लगेंगे।
घेरे खड़े हैं तुमको पकवान-भोग वाले।

***

सोने के बर्तनों में लगता है भोग तुमको,
तंदुल बिखर रहे हैं निर्धन सुदामा वाले।

***

मंदिर सजे तुम्हारा फूलों से बिजलियों से
उसमें जगह कहाँ है, दीपक कोई जगा ले।

***

साजों के संग नाँचे, गाएँ कला दिखाएं,
लोगों के दिल लुभाकर, पैसा कमाने वाले।

***

बदले हैं भाव निर्मल करुणा बदल गई है,
कर्मा के खीचड़े पर, अब कौन नजर डाले।

***

144. बाजी बाजी रे मुरली (1.1.72)

बाजी बाजी रे मुरली मुरलीधर की।
दूध दुहाती गायाँ भाजी, दूध दोहता ग्वाला।
दही बिलौती, पाणी ढोती भाज पड़ी ब्रजबाला,
राधा हो गई, दीवानी नटनागर की।
जमुना तट पर खड्यो साँवरो मुरली मधुर बजावै
ब्रजमंडल की शोभा देखै, स्वर्गलोक ललचावै।
उठी मन में हिलौर जाणू सागर की।
माया तेरी बाँसरी और झूम रह्यो जग सारो
ज्ञानी ध्यानी पार न पावै, पंथ प्रेम को न्यारो,
देखो देखो री झलक वसुधावर की।
मुरली की निर्मल धुन प्यारी कोई पार न पावै,
मूरख भटकै चौरासी में भक्त श्याम नै पावै,
जिनका मन में लगन परमेश्वर की।

***

145. मुरली बजा के मोहन (12.10.71)

मुरली बजा के मोहन, क्यों कर लिया किनारा
अपनों से हाय, कैसा व्यवहार है तुम्हारा।

***

ढूँढा गली गली में, खोजा डगर डगर में,
मन में यही लगन है दर्शन मिलें दुबारा।

***

मधुवन! तुम्हीं बता दो मोहन कहाँ गया है
कैसे झुलस गया है कोमल वदन तुम्हारा।

***

तू ही बता ए जमना, छलिया कहाँ छुपा है
तू भी छली गई है कहती है नील धारा।

***

दुनियाँ कहे दीवानी, पागल कहे जमाना,
लेकिन तुझे भुलाना, हमको नहीं गवारा।

***

राधा की पीर निर्मल, व्याकुल हृदय ही जाने,
समझेगा भला वो क्या जिसको न गम पियारा।

***

146. लोग कहें मैं इस धरती का सार हूँ (4.6.67)

लोग कहें मैं इस धरती का सार हूँ
मैं कहता हूँ मैं भक्तों की मन वीणां का तार हूँ।

***

मुझे पुकारें भक्त वहीं मैं नंगे पाओं आता हूँ
भक्तों का संताप मिटाने, नाना रूप बनाता हूँ।
जो मुझ को आधार समझते मैं उनका आधार हूँ।

***

बड़े बड़े योगी सन्यासी मेरा पार न पाते हैं
प्रेम-डोर में मुझे बाँध कर मेरे भक्त नचाते हैं।
इसीलिए तो कई बार मैं हो जाता साकार हूँ।
भक्त राज नंदा ने फंदा कैसा मुझ पर डाला है,
यह निर्मल नंदलाल नहीं यह नंदा मालिशवाला है।
दुर्योधन की सेवा करने जाने को तैयार हूँ।

***

147. तुम्हें फिर आज भारत वर्ष मोहन याद करता है (22.6.67)

तुम्हें फिर आज भारत वर्ष मोहन याद करता है
दुखी बे आसरा, बेज़ार जीवन याद करता है।
कहाँ है आज वो धरती कभी जो धन उगलती थी
कहाँ वो दूध की नदियां जो घर घर में उछलती थी,
उजाड़ा जिसको दुष्टों ने वो उपवन याद करता है

न गैयां है न ग्वाले हैं न कुंजे है न फुलवारी
दुखी धर्मात्मा जीवन भिखारिन आज सन्नारी
वो गोकुल याद करता है, वो मधुवन याद करता है।
न आए तुम अगर मोहन, तो नैया डूब जाएगी।
दुराचारी हँसेंगे और भक्ति डगमगाएगी।
चले आओ तुम्हें निर्मल सुदर्शन याद करता है।

***

148. जाएँ तो जाएँ कहाँ? (7.7.55)

जाएँ तो जाएँ कहाँ, सुध लेगा कौन यहाँ
साँवरिया, तेरे बिना!
ओ बंसी वाले तुझ को भुलाकर,
मुश्किल है जीना, कुछ तो दया कर।
तेरे बिना यह जग वीरां।
चक्कर में हम है, बंधन में हम हैं
अब तेरे दर्शन की उम्मीद कम हैं
तरस रहा मन बंद जुबां।
श्याम सलौने, बाँसुरी वाले,
इस जग के निर्मल रखवाले
धन्य प्रभु तेरी रचना।

***

149. होली खेलत नंदलाल (8.8.96)

बिरज में होली खेलत नंदलाल।
अंग अंग नव रंग समायो, उड़त अबीर गुलाल।
बाजत ढोल, मृदंग, नगाड़े बीच बीच झांझर झंकारे
रसिया गावत, फाग मचावत, नाँचत देदे ताल।
फूल खिले, कलियां मुस्काई महक उठी सारी फुलवाई।
चिकने पात सलौने लागत, गदराई हर डाल।
नटवर सँग वृषभानु-दुलारी, ज्यों पंकज पर तितली प्यारी

ग्वाल बाल शीतल जल-सरवर, मधु ऋतु मंजु मराल।
मधुर मिलन निर्मल झकझोरी, मनहर है नटवर की होली
इत गारी उत रंग पिचकारी, नयना हुए निहाल।

***

150. बाँसुरी की मेहरबानी हो गई...!!! (3.2.63)

श्याम की दुनिया दीवानी हो गई,
बाँसुरी की मेहरबानी हो गई।

***

क्या मधुर मुरली बजाई श्याम ने,
बंद जमुना की रवानी हो गई।

***

चंद्रमा निस्तेज होकर रह गया,
चाँदनी भी पानी पानी हो गई।

***

झुक गया धरती पै नीला आसमाँ
और धरती आसमानी हो गई।

***

झूम कर चलने लगी ठंडी हवा,
हर दिशा जानी अजानी हो गई।

***

देवता भी फूल बरसाने लगे
वो घड़ी कितनी सुहानी हो गई।

***

बालकों, बूढों के अरमाँ लुट गए
और बेकाबू जवानी हो गई।

***

प्यास तन-मन की बुझी जमना के तीर
धन्य सबकी जिन्दगानी हो गई।

***

रास में भीगी शरद् पूनम की रात,
प्रीत की निर्मल कहानी हो गई।

***

151. चल दिया सांवरे

चल दिया सांवरे हमको बिसार के,
प्रेम दिवानी राधा रोए पुकार के।

***

सूनी है आज तेरी गोकुल नगरिया,
मथुरा में जाके बैठा बाँके साँवरिया।
देखे नज़ारे तेरी उजड़ी बहार के।

***

तिनका चरें ना तोरी बावरी गैया,
रोते हैं गोपी ग्वाले, व्याकुल मैया।
जाने मिला क्या तुझे घर को उजाड़ के।

***

बाट निहारूँ तोरी सुध-बुध खोए,
बावरे नैना मोरे पल-पल रोएँ।
कैसे मिले हैं फल निर्मल प्यार के।

***

152. तेरे दर्शन को जी मचलता है (7.6.65)

सुन के घनश्याम तेरी बांसुरिया, तेरे दर्शन को जी मचलता है।
ओ हठीले, छबीले जादूगर, हर घड़ी क्यों सभी को छलता है।

***

बांस की है ये बांसुरी लेकिन, कैसे रंगीन सुर सुनाती है,
सूखी डाली पे फूल खिल जाते, सूने मंदिर में दीप जलता है।

***

रोज भँवरे भी गुनगुनाते हैं, और कोयल भी गीत गाती है,
तेरी मुरली की तान से लेकिन, जाने पत्थर भी क्यों पिघलता है।

***

बांसुरी तेरी ज़िंदगी अपनी, तेरा दर्शन ही धन हमारा है,
दूर दिल से कभी ना होना तू, एक पल भी वियोग खलता है।

***

तू ही तरसा के ज़िंदगी लेता, मुस्कुरा के तू ही जिलाता है।
तेरे निर्मल सरोज चरणों में, रात के बाद दिन निकलता है।

***

153. आए-आए माखन चोर (3.10.70)

घर-घर में माखन है,
गोकुल में मचा है शोर
सब दरवाजे कर लो बंद
आए-आए माखन चोर।
बिना बोले, बड़े होले, वो घर में आते हैं,
कहीं भी हो धरा माखन, झपट ले जाते हैं।
अरी सखियो, न उनको हम पकड़ने पाते हैं
न जाने क्यों उन्हें तकते, खड़े रह जाते हैं
नटखट हैं कन्हैया, मैया मेरी मैया
माखन के खवैया, बंसी के बजैया।
फिर से न कहीं आ जाएँ।
घर में उत्पात मचाएँ।
ग्वाल बाल संग नंद किशोर।
घर घर में माखन है ...

***

अभी कल ही, सखी पगली, भवन में सोई थी,
खुला था दर, न दी आगर, सपन में खोई थी,
धरी माखन भरी मटकी, न पौंछी धोई थी,
खुले आंगन लुटा माखन, गुजरिया रोई थी।
हर दिन यह कहानी,
करते हैं मन मानी,
मत करना नादानी,
पछताओगी रानी।
अबके जो श्याम आ जाएँ
निर्मल न लौटने पाएँ
बाँध उन्हें कस देना डोर।
घर-घर में ....

***

154. मुरली गई है दिल चीर (4.11.80)

मुरली गई है दिल चीर,
किस तरह मैं दिखाऊँ।
घायल करेजवा की पीर,
किस तरह मैं सुनाऊँ।

***

सुनके मुरलिया की तान,
उड़-उड़ जाएँ मोरे प्राण,
तन का रहे ना कछु ध्यान
मन का रहे ना अभिमान।
ऐसी मतवाली कहीं देखी ना सुनी है।

***

मधुर-मधुर बाके बैन
दिल का चुराय लियो चैन
तरस-तरस दिन रैन
बरस-बरस जाएँ नैन
ऐसी मतवाली कहीं देखी ना सुनी है।

***

कैसे मुरलिया के गीत
पल में लिया है जुग जीत
चाखत खुद नवनीत
तरसे निर्मल प्रीत
ऐसी मतवाली कहीं देखी ना सुनी है।

***

155. गज़ल (5.3.73)

जिनकी नजरों में श्याम होता है,
वक्त उनका गुलाम होता है।

* * *

मन में मुरली की तान होती है,
और होठों पे नाम होता है।

* * *

झूमते पाँव मन की तानों पर,
आँसुओं से प्रणाम होता है।

* * *

ज़िंदगी भर सरूर रहता है
मुक्ति का इंतज़ाम होता है।

* * *

श्याम बेदाम मिल रहा निर्मल
बातों-बातों में काम होता है।

* * *

156. गति सुनो सुनो (6.4.84)

प्रीत लगी घनश्याम से गति सुनो सुनो
तन मगन, मन मगन, नयन अनजान से
प्रीत लगी घनश्याम से...

* * *

मोहन की मुरलिया, दिल चीर ले गई,
आँखों को जलधार, जिगर को पीर दे गई।
भूली बिसरी यादों की जागीर दे गई
विरहिन को वैरागिन की तकदीर दे गई।
अब तो लागी लगन, श्याम के नाम से।
प्रीत लगी घनश्याम से...

* * *

जमुना तट पर बैठ कदम्ब की डाल के तले
मोहन की मुरली सुनने को मन मेरा मचले
रास रचाएँ, गउओं के संग झूमते चलें
नटवर के निर्मल चरणों को चूमते चलें।
प्रीत की बेल पलती नहीं ज्ञान से।
प्रीत लगी घनश्याम से...

* * *

157. तू देखती रहियो (3.10.81)

जमुना तट पर खड़ा कन्हैया,
कारे कन्हवा से डरियो।
मन लेके चला जाएगा, तू देखती रहियो।

* * *

तू चुपके-चुपके जाएगी, वो ग्वाल बाल संग आएगा
तू जितना शोर मचाएगी, वो उतना जोर जमाएगा
और लूट-लूट दधि खाएगा, फिर तुझको नाच नचाएगा
खुद नाचे औरों को नचाए, ऐसे छलिया से डरियो मन ले के ...

* * *

तू कुंजन में छुप जाएगी, वो तुझे ढूँढने आएगा,
जब तुझको ढूँढ ना पाएगा, तब मुरली अधर लगाएगा
वह राधा-राधा गाएगा, तब तेरा मन घबराएगा।
तब पायल शोर मचाएगी
तू मन को थाम ना पाएगी
तू झूम-झूम कर गाएगी
तू श्याम रंग हो जाएगी।

अपनी सुध-बुध बिसराएगी
इतनी निर्मल हो जाएगी
जो अनुरागिन तुझे बनाए, ऐसे छलिया से डरियो।
मन ले के चला जाएगा, तू देखती रहियो।

***

158. आए ना सांवरिया (5.10.58)

आए ना सांवरिया,
नयना ... भर आए .. हाय।
सावन बन गए नयन हमारे,
व्याकुल मनुआ तोहे पुकारे,
तुम ही कहो मुरझाई कलियाँ,
अब कैसे मुस्काएँ ...।

***

सूख चली हैं, यमुना की धारा,
सूना है ब्रजमंडल सारा।
ये विरहा की निर्मल बदली
सौ-सौ रंग दिखाए ...।

***

159. रंगीले-रसीले, छबीले नंदलाल (6.11.61)

राधा जी को रिझाने चले हैं बरसाने,
रंगीले, रसीले, छबीले नंदलाल।

***

नारी का वेष धरा सांवरिया ने,
सोलह सिंगार किये नंदलला ने
लगे हैं शरमाने, होठों में मुस्काने। रंगीले ...

***

गोकुल से आई देखो कैसी मणिहारी,
कहती है चुड़ियाँ पहनो दुनिया से न्यारी।
वो बन के परवाने, आएँगे बरसाने। रंगीले ...

***

पहनो ये चुड़ियाँ राधे, मोहन को प्यारी,
गोकुल की राह भूलें, बाँके बिहारी।
लगे हैं पहनाने, बातों में उलझाने। रंगीले ...

***

राधा ने देख लिया, बांसुरिया को,
सबने पहचान लिया, उस छलिया को,
वही हैं मस्ताने वहीं हैं परवाने। रंगीले ...

***

कैसी रंगीली है ये निर्मल कहानी,
चंदा चकौरी जैसी प्रीत पुरानी।
रसीलों में रसीले, दीवानों में दीवाने। रंगीले ...

***

160. कोई संदेश आया है

अरी सखियो इधर आओ, कोई संदेश आया है।
सजा कर आरती लाओ, कोई संदेश आया है।

***

अनोखी प्यार की दुनियाँ, अनोखे प्रीत के सपने,
वो कितनी दूर बैठे हैं, मगर दिल को लगें अपने,
जरा पाती तो पढ़ जाओ, कोई संदेश आया है।

***

भिगोदी आसुओं से क्यों, सलौने श्याम की पाती,
कुशल तो हैं वहाँ प्रियतम, धड़कती आज क्यों छाती,
हमें भी कुछ तो बतलाओ, कोई संदेश आया है।

***

उन्हें तो मिल गए होंगे हजारों चाहने वाले,
यहाँ आँसू बरसते हैं, तरसते गोपियाँ ग्वाले,
न हमको और तरसाओ कोई संदेश आया है।

***

मधुप हम तो अनारी है, हमें क्या ज्ञान से लेना,
दया कुछ कर सको हम पर, उन्हीं को भेज तुम देना,
न निर्मल ज्ञान सिखलाओ, कोई संदेश आया है।

***

161. श्याम को हमने

श्याम को हमने अगर दिल में उतारा होता,
लोक परलोक पै अधिकार हमारा होता।

***

मस्त बचपन गया, अनमोल जवानी आई।
जिंदगी रंग बेशुमार लिये, लहराई।
कुछ तो सत्संग से जीवन को सँवारा होता। लोक परलोक ...

***

बैल की भाँति पचे, लाखों कमाया हमने।
और बुलबुल की तरह, नीड़ सजाया हमने।
एक पल तो कभी हरिनाम उचारा होता। लोक परलोक ...
वाटिका में कभी पतझार है बहार कभी,
यों ही जीवन में रहे जीत कभी हार कभी
जो सहज भाव से सुख दुख को निहारा होता। लोक परलोक ...
ज्वार सागर में उठा हर तरफ अँधेरा है,
अपनी नैय्या को तरंगों ने आज घेरा है।
काश! निर्मल इन्हीं मोजों पे किनारा होता। लोक परलोक ...

***

162. मुरली वाले मुरली बजा

मुरली वाले मुरली बजा
तुझे मधुवन बुलाता है, आ।
कहाँ है ... आ भी जा ...।

***

गोकुल की गलियों में, फूलों की कलियों में छाई अजब बेकसी है।
उजड़ी बहारों में, अंबर के तारों में, तेरी मुरलिया बसी है।
बिलखते हैं सारे, ये किस्मत के मारे,
बता कौन इनको सँभाले ?

***

दीवानी राधा ने, आँसू के मोती से, गूँथी है विरहा की माला,
जा री ओ कोयलिया, लेती जा यह माला, पहिनेगा वो मुरली वाला,
उन्हें तू बताना कि ब्रज है दिवाना,
नमूना है तेरे हवाले ...।

***

ज्ञान गठरिया ले, मथुरा नगरिया से, आया था उद्धव तुम्हारा।
अपनी कहानी को, अपनी ही वाणी में, वो खुद कहेगा बेचारा।
अगर तू न आए, तो यह कामना है,
हमें भी तू मथुरा बुला ले।

***

टेढ़ा है साँवरिया, टेढ़ी है बाँसुरिया, टेढ़ा है संसार सारा।
हम भोले दीवाने, निठुराई क्या जाने, अंतस है निर्मल हमारा।
अरे ओ खिवैय्या। भँवर में है नैय्या।
हमें डूबने से बचाले।।

***

163. है ना (13.6.73)

यमुना तट पर मुरली बाजे,
घर घर गूँजे बैना।
गीत कहीं, संगीत कहीं,
यह प्रीत अनोखी है ना, बोलो है ना।

***

मधुर-मधुर मुरली रस घोले, धरती अंबर डोले,
प्रेम दीवानी राधा झूमे, छम् छम् पायल बोले।
मस्त हुई ब्रजवाला, कैसा जादू डाला।
हरे बाँस की बाँसुरिया ने छीना सबका चैना,
बोलो है ना

***

दूर गगन में चंदा चमके, वन में मगन चकोरी,
मेघा गरजे, मोरा नांचे, प्रीत की लंबी डोरी,
जो जाके मन भाए, सो ताको ललचाए,
चाहे जुबाँ खामोश रहे पर कह देते हैं नैना।
बोलो है ना।

***

रावण के चंगुल में सीता, राम नाम नित गाए,
सागर से मिलने को सरिता, पर्वत से गिर जाए।
चातक उड़ता जाए, निर्मल प्रीत निभाए।
तब तक प्यासा रहे कि जब तक स्वाति बूँढ बरसे ना।
बोलो है ना।

***

164. झूला (2.3.70)

रिमझिम बरसे बादरिया कारी-कारी,
मधुवन में झूलें राधा बिहारी,
मगन हैं सब नर नारी, खिली मन की फुलवारी।

***

अंबुआ की डार पै चढ़े हैं हिंडोले, तन मन डोले पवन झकोले।
मस्त कोयलिया कुहुक उठी, प्यारी प्यारी।
मधुवन में ... झूलें राधा मुरारी।

***

कारे बदरवा श्याम बिहारी, हरियल धरती राधा प्यारी।
मुकुट झलक है बीजुरिया, मतवारी।
मधुवन में ... झूलें राधा मुरारी।
लहर-लहर झूला लहराए, चंचल मन मल्हार सुनाए।
हर पायल में थिरकन है न्यारी न्यारी।
मधुवन में ...

***

झूला झूलें, मन हर्षाएँ, सबको सुख की राह दिखाएँ।
निर्मल है नित प्रीत भरी फुलवारी।
मधुवन में, सावन में, झूलें राधा मुरारी।।

***

165. मन हर लिया हमारा (14.8.70)

मुरली मधुर बजा के, मनहर ने मुस्कुरा के,
मन हर लिया हमारा, वो श्याम प्यारा-2।

***

मोर, मुकुट, मकराकृति कुंडल, गल वैजयंती माला,
कटि पीताम्बर अधर मुरलिया, बाँकी चितवन वाला।
तन में तपन जगा के, मन में लगन लगा के।
मन हर लिया हमारा।।

***

अब तक नैनन बीच बसी वह श्यामल छवि मतवाली,
मन के नभ में बनके बादरिया, छाई अलकें काली।
नैनों से दिल में आके, दुनियाँ नई बसा के।
मन हर लिया हमारा।।

***

मनमोहन को जमना तट पर खोज खोज हम हारे,
अँखियां बरसें, मनुआ तरसे, व्याकुल प्राण हमारे।
दर्शन सुधा पिला के, हर तार झनझना के,
मन हर लिया हमारा।
राधा के अन्तस् की पीड़ा, मोहन ने ना जानी
हो गई रे बदनाम साँवरिया, निर्मल प्रेम दिवानी।
मन प्राण में समा के, फिर भी नजर चुरा के,
मन हर लिया हमारा
वो श्याम प्यारा-प्यारा।

***

166. याद आ रही है (15.2.71)

याद आ रही है, तेरी याद आ रही है।
ओ बनवारी, याद तुम्हारी, तड़पा रही है।।

***

याद आए वो कान्हा तेरा बेनु बजाना झूम के,
ग्वाल बाल संग जाना और धेनु चराना घूम के।
वो पनघट की हठ नटखट की, याद आ रही है।।

***

सूना है वृंदावन और सूना गोकुल गाँव रे,
तन झुलसाए अब तो ये ठंडी ठंडी छाँव रे।
अब मधुवन की रुत सावन की, तरसा रही है।।

***

ओ साँवरिया राधा तेरी वन वन डोले बावरी,
रह रह खोजें सारे, वो निर्मल सूरत साँवरी।
प्रेम दीवानी, अँखियाँ पानी बरसा रही हैं।।

***

167. मतवाली राधा (11.3.70)

राधा नीर भरन को चाली ... रे...।
जब चित्त में चितचोर बसे तो कौन करे रखवाली।।

***

संभल-संभल पग धरे गुजरिया, छम छम बाजे झांझरिया,
लचक-लचक बल खाय कमरिया, बोझ बनी सिर गागरिया।
नयन दीवाने खोज रहे हैं, कहाँ छुपे हैं सांवरिया,
अभी-अभी तो यहीं कहीं पर बाज रही थी बाँसुरिया।
भूल गई मारग पनघट का हो गई रे मतवाली।।

***

गोरे मुख पर अलकें काली, ज्यों चंदा पर बादरिया,
झिलमिल चमके चाँद सितारे, जब लहराए चूनरिया।
मधुर-मधुर मुस्कान अधर पर, रंग बदन का केसरिया,
मन वीणा झंकार उठी है, ''कब आओगे साँवरिया।''
तन की गागर छलक रही है, मन की मटुकिया खाली।।

***

पनघट पहुँची बोझिल मन से, गागर जाय उतारी रे।
तभी न जाने कौन दिशा से आ पहुँचे बनवारी रे।
उधर कदंब के तले श्याम की बंसी बाजी प्यारी रे,
इधर थिरकने लगी राधिका, झूम उठी फुलवारी रे।
राधा मोहन की छवि निर्मल, सुख सरसाने वाली।।

***

168. कान्हा हमको तोसे प्यार (रसिया) (16.3.68)

कान्हा हमको तोसे प्यार, तोरी मुरली से नहीं,
तोसे जीवन का सिंगार, तोरी मुरली से नहीं।

* * *

तू कान्हा, घर घर में जावे, झूम झूम कर नाच दिखावै,
तोसे राजी सब नर नार, तोरी मुरली से नहीं।

* * *

मनमोहन! तू भोला भाला, मन का उजला तन का काला।
तोसे बहे प्रेम रसधार, तोरी मुरली से नहीं।

* * *

तेरी मुरलिया बहुत सतावै, कुंजन-कुंजन नाच नचावै।
तोसे लाख करें तकरार, तोरी मुरली से नहीं।

* * *

तो को भी टेढ़ो करि राखै, अधर लगी अमृत रस चाखै,
तोहे हमसे मिले दुलार, तोरी मुरली से नहीं।

* * *

जो मुरली से बाँह छुड़ावै, तो निर्मल मन में बस जावै,
तोसै ब्रजमंडल सरकार, तोरी मुरली से नहीं।

* * *

169. क्या लेते हो साँवरे (4.4.72)

क्या लेते हो साँवरे, तुम उनसे दूर रहके,
भक्त तुम्हारे दुखियारे, तुमको पुकारा करते हैं।

* * *

जिनके संग कभी तुम खेले, नित बरसाए रंग नवेले,
आज वही निर्बल जन सारे, जीवन की हर कटुता झेलें।
तन में तपन मन में अगन, कंठों में दम, भीगे नयन,
रो रो के गुजारा करते हैं। तुमको ...

* * *

पलट गई जीवन की धारा, डगर डगर छाया अँधियारा,
हर मंजिल पर, हर अवसर पर, दुर्जन जीता, सज्जन हारा,
पीते हैं गम, सहते सितम, फिर भी नहीं, धीरज में कम
नित ध्यान तुम्हारा करते हैं। तुमको ...

* * *

घुटते रहते, पिसते रहते, हँस हँस कर दुख सहते रहते,
परहित की पतवार सँभाले, जीवन नद में बहते रहते
निर्मल वचन, निर्मल करम, कितनी प्रबल उनकी लगन।
क्यों आप किनारा करते हैं। तुमको पुकारा करते हैं।

* * *

170. चल चल चल ... (3.7.71)

चल चल चल बरसाने को, कान्हा।
चलें राधा जी के दरशन पाने को।।

* * *

अति सुंदर वृषभानु दुलारी,
चंदावदनी केशर क्यारी।
मोहन चंद्र चकोरी,
अति चंचल, अति भोरी,
हमें ले चल छवि दिखलाने को।।

* * *

मालिनियाँ का भेष बना लें,
डलिया में कुछ फूल सजा लें।
राधा के घर जाएँ,
मन से उन्हें सजाएँ।
इन नयनों की प्यास बुझाने को।।

* * *

ओ नटखट चितचोर साँवरिया,
ले चल अपने संग बाँसुरिया,
जब राधा पहचाने, झूमेंगे मस्ताने,
वहाँ निर्मल रस सरसाने को
चल चल चल बरसाने को।

***

171. आजा कन्हैया एक बार (3.7.73)

आजा कन्हैया एक बार,
आजा ब्रज है दीवाना तेरी याद में।

***

दधि की मटुकिया ले, ढूँढे गुजरिया तुझे साँझ सकारे,
गउओं के संग संग ग्वाले पुकारें, आजा जमना किनारे।
मुरली सुना दे रसदार।

***

रैन दिवस तेरी बाट निहारे मैया, खोले किवरिया,
राधा दीवानी बैठी अँखियाँ बिछाए, अब तो आजा साँवरिया
दरस दिखादे एक बार।

***

आजा कि मेघा आए धरती ने ओढी धानी धानी चुनरिया।
लाख बदरिया बरसे, प्यास बुझे ना अपनी सारी उमरिया।
दिल को है तेरा इंतजार।

***

साँवरिया काहे सुध बिसराई, परदेस में जाके,
चैन मिला क्या किसी निर्मल मन का चैन चुराके।
हम तो गए हैं दिल हार।

***

172. श्याम की बाँसुरी ने ... (4.3.74)

श्याम की बाँसुरी ने सितम कर दिया,
मोह दुनिया का दिल से खतम कर दिया।
दूर हमने भी अपना अहम् कर दिया,
ध्यान उसका अधिक अपना कम कर दिया।

***

जब से कानों में मुरली की धुन आ गई,
दिल पै जादू हुआ, बेखुदी छा गई।
दर्शनों की लगन, दिल को तड़पा गई,
प्रेम रस में मगन, तन बदन कर दिया

***

श्याम तन में रमा, श्याम मन में रमा।
श्याम वाणी, श्रवण में, नयन में रमा।
जल, पवन, तेज, धरती, गगन में रमा,
श्याम सत्यम्, शिवम्, सुंदरम् कर दिया।

***

उसकी मुरली ने जब जब पुकारा हमें,
कोई बंधन हुआ ना गवारा हमें।
जग समंदर लगा वो किनारा हमें,
बाँह थामी तो निर्मल जनम कर दिया।

***

173. कितनी प्यारी तूने (10.9.72)

कितनी प्यारी तूने मुरली बजाई, मन करे झूमते रहें।
तू नटनागर, तू मुरलीधर, सुंदर श्याम सलौना,
तेरी मुरलिया जादूगरनी, कर गई जादू टोना।

***

वीणा के तारों की झंकारों जैसी,
पर्वत के झरनों की गुंजारों जैसी।
कोयल की कूकों सी मलहारों जैसी।
कोई पागल हो ना जाए, बेखुदी में खो ना जाए,
मुरली की धुन से गूँजा, धरती का कोना कोना।
तेरी मुरलिया ...

***

मुरली की धुन सुनकर, तन मन लहराए,
धरती के कण कण में, श्याम नज़र आए।
आँगन में मन न लगे, धान नहीं भाए
मन चाहे उड़ उड़ के, बंशी वट जाए
बिन पँखों के कैसे आएँ, साँवरे का दर्शन पाएँ
निर्मल मन को कैसे रोकें, प्यारे श्याम कहो ना
तेरी मुरलिया ...

* * *

174. छाए हो श्याम ... (20.4.71)

छाए हो श्याम दिल पै मेरे, तुम खुमार बनके,
आँखों में बसे रहना, तुम इंतजार बनके।

* * *

मुरली बजाते रहना, युँ ही मुस्कुराते रहना,
जब जब बुलाएँ तुमको, दर्शन दिखाते रहना।
तन की तपन बुझाना शीतल बयार बनके।

* * *

तुम बिन नहीं हमारा, जग में कहीं ठिकाना,
सीखा है हमने केवल, मनहर से मन लगाना,
तुम संग-संग रहना, जीवन में प्यार बनके।

* * *

अपने तो बस तुम्हीं हो, तुमको हजार होंगे,
बादल के लिये चातक तो बेशुमार होंगे,
अपने लिये भी आना, रिमझिम फुहार बनके।

* * *

मूरत तुम्हारी मनहर, मन में बसी रहेगी,
बस आपकी खुशी में, अपनी खुशी रहेगी,
आँगन में लहलहाना, निर्मल बहार बनके।

* * *

175. साँवरिया - साँवरिया (25.3.73)

साँवरिया - साँवरिया जाना नहीं
हमें छोड़ के .....
भूलोगे कैसे कान्हा गउँए चराना
रास रचाना, मीठी वंशी बजाना।

* * *

नंद, यशोदा, ग्वाले, गैयाँ रोती हैं,
सूना पनघट, सूनी गलियाँ रोती है।।
तेरी राधा, तेरी सखियाँ रोती हैं।
सबके मन रोते हैं, अँखियाँ रोती हैं,
भूलोगे कैसे कान्हा बीता जमाना
माखन चुराना, मन में बस जाना।
साँवरिया ....

* * *

सच कहते हैं जो तुम मथुरा जाओगे,
खुद तड़पोगे और हमें तड़पाओगे।
हमें पता है, कभी ना वापस आओगे,
मनमोहन, तुम परदेसी बन जाओगे।
भूलोगे कैसे कान्हा बचपन सुहाना।
दिल को रूलाएगा, निर्मल तराना।
साँवरिया ....

* * *

176. होली (30.5.71)

अधर लगी इठलाई बांसुरिया, सौतिनियाँ को लाज न आई।

* * *

भूल गई अपनी जड़ता को, पिछली गति बिसराई।
कल जो रही इक बाँस की पौरी, आज करे ठकुराई।

* * *

हम जो गई उनके दर्शन को, कान्हा ने आँख चुराई,
दुर्गति देख हठीली बांसुरिया, मन की मन मुस्काई।।

* * *

आप अधर रसपान करत हैं, कान्ह लियो बिल्माई।
वो क्या जानत पीर पराई, जाके फटी ना बिवाई।

* * *

जो है निर्मल प्रीत हमारी, पकड़ेंगें बाँह कन्हाई।
पाँव परैगी हठीली बाँसुरिया, करके दुहाई, दुहाई।।

***

177. होरी (2.2.71)

हमारी बात सुनो ब्रजराज,
अब न चलेगी, लूट बिरज में, बदल्यो साज समाज।

***

हम ग्वालिन बरसाने वाली,
रूप रासि, गुण खान निराली।
तुम नटखट, छलियन के छलिया,
चौरन के सिरताज।।

***

लूट-लूट नित माखन खायौ
ब्रजवासिन को नाच नचायौ।
न्याय करैं अब राधा रानी,
दंड मिले तोहे आज।

***

धर बांधे सखियन बनवारी,
मुस्काई वृषभानु दुलारी।
रंग मल्यो, छीनी बांसुरिया।
शरमाये नटराज।

***

हारे श्याम, राधिका जीती,
प्रेम पंथ की उल्टी रीती।
कुंजन में नाचे नट नागर,
निर्मल भक्तन काज।

***

178. होरी (काफ़ी) (1.3.76)

चलो सखि, खेलें सांवरिया सों होरी।
बात सुनो अब मोरी।

***

लूट-लूट दधि माखन खावत।
सब सों करत बरजोरी,
जमुना के तट पर बेनु बजावत,
सखियाँ फिरैं दौरी दौरी।

***

हम जो गई जमुना जल भरने,
सर की मटुकिया फौरी,
जित देखो उत बाँध गिराओ,
रंग दो सुरतिया भोरी।

***

अबला रहे कछु बस ना चलैगो,
सबला बनो थोरी थोरी।
खुद नाचो, रसिया को नचाओ,
कर लो बाँसुरिया की चोरी।

***

ले सखियाँ निकसी कुंजन में,
श्री वृषभानु किशोरी।
बाहर क्यों ढूंढत छवि निर्मल,
उर चित चोर बस्यो री।

***

180. वासना दूर

तेरे प्यारे-प्यारे जीवन को विषयों की नज़र ना लगे, वासना दूर।
घनश्याम बसाले आँखों में, पापों की नजर ना लगे, वासना दूर।
बड़े भाग्य नर जन्म मिले, ये ना युंही माटी में मिले
फूल से ज्यादा कोमल हें सोच समझ कर कदम बढ़ें
हरिनाम के मोती आँचल में
माया की नजर ना लगे, वासना दूर।

***

जो भी जगत में आता है, वो अंधा बन जाता है,
यौवन के कुछ गीत सुहाने, झूम-झूम कर गाता है,
शुभ कर्म कमा ले जीवन में
कहीं यम की नजर ना लगे, वासना दूर।

***

कर्महीन मत जिया करो, हरि सुमिरन कुछ किया करो।
औरों को भी जीवन देकर, खुद भी अमृत पिया करो,
सब मैल हटा लो धो-धोकर,
निर्मल की नज़र ना लगे, वासना दूर।

***